जुलाई 2023

मेरी माटी मेरा देश

मिट्टी को नमन वीरों का वंदन

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 **प्रधानमंत्री का सन्देश** 1

02 **मुख्य आलेख**

2.1 **मेरी माटी मेरा देश :** आज़ादी के अमृत महोत्सव का समापन 14

2.2 **सांस्कृतिक जागृति को सक्षम करता भारतीय विरासत का पुनर्जीवन** 28

2.3 **नशीले पदार्थों के प्रति जागरूक हो आगे बढ़ रहे हैं युवा** 50

03 **संक्षिप्त में**

3.1 **वृक्षारोपण और जल संरक्षण की अनोखी कहानियाँ** 22

3.2 **त्योहार और परम्पराएँ हमें गतिशील बनाती हैं** 34

3.3 **त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन, म.प्र. :** भारत की कला शिल्प और परम्पराओं का संग्रह 38

3.4 **प्रभात सिंह बारहट :** कला के माध्यम से इतिहास का संरक्षण 42

3.5 **सुरेश राघवन :** कला के माध्यम से प्रकृति सेवा 44

3.6 **भोजपत्र :** भारत की प्राचीन विरासत का पुनर्जीवन 46

3.7 **मेहरम के बिना हज :** मुस्लिम महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक कदम 48

3.8 **भारत का मिनी ब्राज़ील :** बिचारपुर की उल्लेखनीय फुटबॉल यात्रा 60

04 **लेख व साक्षात्कार**

4.1 उत्तर प्रदेश में वृक्षारोपण अभियान की सफलता की कहानी - **अरुण कुमार सक्सेना** 26

4.2 विलुप्त होती कला और कहानियों का संरक्षण - **दुर्गाबाई व्याम** 32

4.3 काशी विश्वनाथ धाम : श्रद्धालुओं के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य - **डॉ. सुनील वर्मा** 36

4.4 नशा मुक्त भारत अभियान : रोकथाम, उपचार, पुनर्वास - **डॉ. वीरेंद्र कुमार** 54

4.5 आशा, उपचार और रिकवरी : एक नशा मुक्त भारत - **समायरा सन्धू** 56

4.6 मुक्ति का सफ़र : संयम के ज़रिए जीवन का सशक्तीकरण - **सरफ़राज़** 57

05 **प्रतिक्रियाएँ** 64

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो! नमस्कार

'मन की बात' में आप सभी का बहुत-बहुत स्वागत है। जुलाई का महीना यानी मानसून का महीना, बारिश का महीना। बीते कुछ दिन प्राकृतिक आपदाओं के कारण चिन्ता और परेशानी से भरे रहे हैं। यमुना समेत कई नदियों में बाढ़ से कई इलाकों में लोगों को तकलीफ़ उठानी पड़ी है। पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन की घटनाएँ भी हुई हैं। इसी दौरान देश के पश्चिमी हिस्से में, कुछ समय पूर्व गुजरात के इलाकों में, बिपरजॉय साइक्लोन भी आया, लेकिन साथियो, इन आपदाओं के बीच हम सब देशवासियों ने फिर दिखाया है कि सामूहिक प्रयास की ताकत क्या होती है। स्थानीय लोगों ने, हमारे NDRF के जवानों ने, स्थानीय प्रशासन के लोगों ने दिन-रात लगाकर ऐसी आपदाओं का मुकाबला किया है। किसी भी आपदा से निपटने में हमारे सामर्थ्य और संसाधनों की भूमिका बड़ी होती है, लेकिन इसके साथ ही हमारी संवेदनशीलता और एक दूसरे का हाथ थामने की भावना उतनी ही अहम होती है। सर्वजन हिताय की यही भावना भारत की पहचान भी है और भारत की ताकत भी है।

साथियो, बारिश का यही समय 'वृक्षारोपण' और 'जल संरक्षण' के लिए भी उतना ही ज़रूरी होता है। **आज़ादी के 'अमृत महोत्सव' के दौरान बने 60 हज़ार से ज़्यादा अमृत सरोवरों में भी रौनक बढ़ गई है। अभी 50 हज़ार से ज़्यादा अमृत सरोवरों को बनाने का काम चल भी रहा है। हमारे देशवासी पूरी जागरूकता और ज़िम्मेदारी के साथ 'जल संरक्षण' के लिए नए-नए प्रयास कर रहे हैं।** आपको याद होगा, कुछ समय पहले मैं एम.पी. के शहडोल गया था। वहाँ मेरी मुलाकात पकरिया गाँव के आदिवासी भाई-बहनों से हुई थी। वहीं पर मेरी उनसे प्रकृति और पानी को बचाने के लिए भी चर्चा हुई

थी। **अभी मुझे पता चला है कि पकरिया गाँव के आदिवासी भाई-बहनों ने इसे लेकर काम भी शुरू कर दिया है। यहाँ प्रशासन की मदद से लोगों ने करीब सौ कुओं को वाटर रिचार्ज सिस्टम में बदल दिया है। बारिश का पानी अब इन कुओं में जाता है और कुओं से ये पानी ज़मीन के अंदर चला जाता है। इससे इलाके में भू-जल स्तर भी धीरे-धीरे सुधरेगा। अब सभी गाँव वालों ने पूरे क्षेत्र के करीब-करीब 800 कुएँ को रिचार्ज के लिए उपयोग में लाने का लक्ष्य बनाया है। ऐसी ही एक उत्साहवर्धक खबर यू.पी. से आई है। कुछ दिन पहले उत्तर प्रदेश में एक दिन में 30 करोड़ पेड़ लगाने का रिकॉर्ड बनाया गया है। इस अभियान की शुरुआत राज्य सरकार ने की। उसे पूरा वहाँ के लोगों ने किया। ऐसे प्रयास जन-भागीदारी के साथ-साथ जन-जागरण के भी बड़े उदाहरण हैं। मैं चाहूँगा कि हम सब भी पेड़ लगाने और पानी बचाने के इन प्रयासों का हिस्सा बनें।**

मेरे प्यारे देशवासियो, इस समय सावन का पवित्र महीना चल रहा है। सदाशिव महादेव की साधना-आराधना के साथ ही सावन हरियाली और खुशियों से जुड़ा होता है। इसीलिए सावन का आध्यात्मिक के साथ ही सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्त्व रहा है। सावन के झूले, सावन की मेहँदी, सावन के उत्सव यानी सावन का मतलब ही आनन्द और उल्लास होता है।

साथियो, हमारी इस आस्था और इन परम्पराओं का एक पक्ष और भी है। हमारे ये पर्व और परम्पराएँ हमें गतिशील बनाते हैं। सावन में शिव आराधना के लिए कितने ही भक्त काँवड़ यात्रा पर निकलते हैं। 'सावन' की वजह से इन दिनों 12 ज्योतिर्लिंगों में भी खूब श्रद्धालु पहुँच रहे हैं। आपको ये जानकर भी अच्छा लगेगा कि बनारस पहुँचने वाले लोगों की संख्या भी रिकॉर्ड तोड़ रही है। **अब काशी में हर साल 10 करोड़ से भी ज़्यादा पर्यटक पहुँच रहे हैं। अयोध्या, मथुरा, उज्जैन जैसे तीर्थों पर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या भी तेज़ी से बढ़ रही है। इससे लाखों ग़रीबों को रोज़गार मिल रहा है, उनका जीवनयापन हो रहा है। ये सब हमारे सांस्कृतिक जन-जागरण का परिणाम है। इसके दर्शन के लिए अब तो पूरी दुनिया से लोग हमारे तीर्थों में आ रहे हैं। मुझे ऐसे ही दो अमेरिकन दोस्तों के**

बूँदी शैली

पहाड़ी शैली

नाथद्वारा शैली

बारे में पता चला है, जो कैलिफ़ोर्निया से यहाँ अमरनाथ यात्रा करने आए थे। इन विदेशी मेहमानों ने अमरनाथ यात्रा से जुड़े स्वामी विवेकानंद के अनुभवों के बारे में कहीं सुना था। उससे उन्हें इतनी प्रेरणा मिली कि ये खुद भी अमरनाथ यात्रा करने आ गए। ये इसे भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद मानते हैं। **यही भारत की ख़ासियत है कि सबको अपनाता है, सबको कुछ न कुछ देता है। ऐसे ही एक फ्रेंच मूल की महिला हैं – शारलोट शोपा। बीते दिनों जब मैं फ्रांस गया था तो इनसे मेरी मुलाकात हुई थी। शारलोट शोपा एक योग प्रेक्टिशनर हैं, योग टीचर हैं और उनकी उम्र 100 साल से भी ज़्यादा है। वो सेंचुरी पार कर चुकी हैं। वो पिछले 40 साल से योग प्रैक्टिस कर रही हैं।** वो अपने स्वास्थ्य और 100 साल की इस आयु का श्रेय योग को ही देती हैं। वो दुनिया में भारत के योग विज्ञान और इसकी ताकत का एक प्रमुख चेहरा बन गई हैं। **इन से हर किसी को सीखना चाहिए। हम न केवल अपनी विरासत को अंगीकार करें, बल्कि उसे ज़िम्मेदारी से साथ विश्व के सामने प्रस्तुत भी करें और मुझे खुशी है कि ऐसा ही एक प्रयास इन दिनों उज्जैन में चल रहा है। यहाँ देशभर के 18 चित्रकार पुराणों पर आधारित आकर्षक चित्रकथाएँ बना रहे हैं।** ये चित्र बूँदी शैली, नाथद्वारा शैली, पहाड़ी शैली और अपभ्रंश शैली जैसी कई विशिष्ट शैलियों में बनेंगे। इन्हें उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय में प्रदर्शित किया जाएगा, यानी कुछ समय बाद, जब आप उज्जैन जाएँगे, तो महाकाल महालोक के साथ-साथ एक और दिव्य स्थान के आप दर्शन कर सकेंगे।

साथियो, उज्जैन में बन रही इन

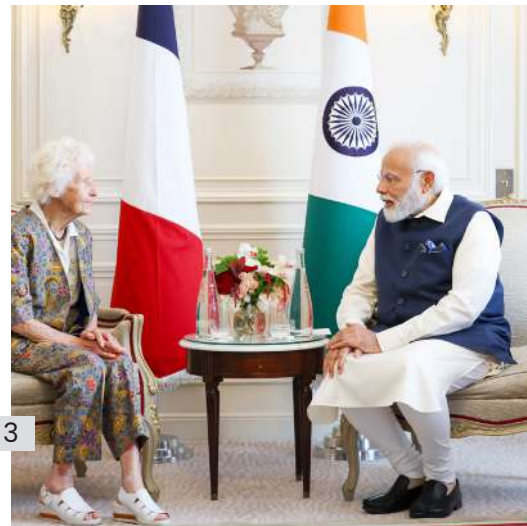

प्रभात सिंह मोडभाई बरहाट

सुरेश राघवन

पेंटिंग्स की बात करते हुए मुझे एक और अनोखी पेंटिंग की याद आ गई है। ये पेंटिंग राजकोट के एक आर्टिस्ट प्रभात सिंह मोडभाई बरहाट जी ने बनाई थी। ये पेंटिंग छत्रपति वीर शिवाजी महाराज के जीवन के एक प्रसंग पर आधारित थी। आर्टिस्ट प्रभात भाई ने दर्शाया था कि छत्रपति शिवाजी महाराज राज्याभिषेक के बाद अपनी कुलदेवी 'तुलजा माता' के दर्शन करने जा रहे थे, तो उस समय क्या माहौल था। अपनी परम्पराओं, अपनी धरोहरों को जीवंत रखने के लिए हमें उन्हें सहेजना होता है, उन्हें जीना होता है, उन्हें अगली पीढ़ी को सिखाना होता है। मुझे खुशी है कि आज, इस दिशा में अनेकों प्रयास हो रहे हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, कई बार जब हम इकोलॉजी, फ्लोरा-फॉना, बायोडाइवर्सिटी जैसे शब्द सुनते हैं, तो कुछ लोगों को लगता है कि ये तो स्पेशलाइज़्ड सब्जेक्ट है, इनसे जुड़े एक्सपर्ट्स के विषय हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। अगर हम वाकई प्रकृति से प्रेम करते हैं, तो हम अपने छोटे-छोटे प्रयासों से भी बहुत कुछ कर सकते हैं। **तमिलनाडु में वाडावल्ली के एक साथी हैं, सुरेश राघवन जी। राघवन जी को पेंटिंग का शौक है। आप जानते हैं, पेंटिंग कला और कैनवास से जुड़ा काम है, लेकिन राघवन जी ने तय किया कि वो अपनी पेंटिंग के ज़रिए पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की जानकारी को संरक्षित करेंगे। वो अलग-अलग फ्लोरा और फॉना की पेंटिंग्स बनाकर उनसे जुड़ी जानकारी का डॉक्यूमेंटेशन करते हैं। वो अब तक दर्जनों ऐसी चिड़ियाओं की, पशुओं की, ओर्चिड्स की पेंटिंग्स बना चुके हैं, जो विलुप्त होने की कगार पर हैं। कला के ज़रिए प्रकृति की सेवा करने का ये उदाहरण वाकई अद्भुत है।**

मेरे प्यारे देशवासियो, आज मैं आपको एक और दिलचस्प बात भी बताना चाहता हूँ। कुछ दिन पहले सोशल मीडिया पर एक अद्भुत क्रेज दिखा। **अमेरिका ने हमें सौ से ज़्यादा दुर्लभ और प्राचीन कलाकृतियाँ वापस लौटाई हैं। इस खबर के सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर इन कलाकृतियों को लेकर खूब चर्चा हुई। युवाओं में अपनी विरासत के प्रति गर्व का भाव दिखा।**

भारत लौटीं ये कलाकृतियाँ ढाई हज़ार साल से लेकर ढाई सौ साल तक पुरानी हैं। आपको यह भी जानकर खुशी होगी कि इन दुर्लभ चीज़ों का नाता देश के अलग-अलग क्षेत्रों से है। ये टेराकोटा, स्टोन, मेटल और लकड़ी के इस्तेमाल से बनाई गई हैं। इनमें से कुछ तो ऐसी हैं, जो आपको आश्चर्य से भर देंगी। आप इन्हें देखेंगे, तो देखते ही रह जाएँगे। इनमें 11वीं शताब्दी का एक खूबसूरत सैंडस्टोन स्कल्पचर भी आपको देखने को मिलेगा। ये नृत्य करती हुई एक 'अप्सरा' की कलाकृति है, जिसका नाता मध्य प्रदेश से है। चोल युग की कई मूर्तियाँ भी इनमें शामिल हैं। देवी और भगवान मुर्गन की प्रतिमाएँ तो 12वीं शताब्दी की हैं और तमिलनाडु की वैभवशाली संस्कृति से जुड़ी हैं। भगवान गणेश की क़रीब एक हज़ार वर्ष पुरानी काँसे की प्रतिमा भी भारत को लौटाई गई है। ललितासन में बैठे उमा-महेश्वर की एक मूर्ति 11वीं शताब्दी की बताई जाती है, जिसमें वह दोनों नंदी पर आसीन हैं। पत्थरों से बनी जैन तीर्थंकरों की दो मूर्तियाँ भी भारत वापस आई हैं। भगवान सूर्य देव की दो प्रतिमाएँ भी आपका मन मोह लेंगी। इनमें से एक सैंडस्टोन से बनी है। वापस लौटाई गई चीज़ों में लकड़ी से बना एक पैनल भी है, जो समुद्र मन्थन की कथा को सामने लाता है। 16वीं-17वीं सदी के इस पैनल का जुड़ाव दक्षिण भारत से है।

साथियो, यहाँ मैंने तो बहुत कम ही नाम लिए हैं, जबकि देखें तो यह लिस्ट बहुत लम्बी है। **मैं अमेरिकी सरकार का आभार करना चाहूँगा, जिन्होंने हमारी इस बहुमूल्य विरासत को लौटाया है। 2016 और 2021 में भी जब मैंने अमेरिका की यात्रा की थी, तब भी कई कलाकृतियाँ भारत को लौटाई गई थीं। मुझे विश्वास है कि ऐसे प्रयासों से हमारी सांस्कृतिक धरोहरों की चोरी रोकने को इस बात को ले करके देशभर में जागरूकता बढ़ेगी। इससे हमारी समृद्ध विरासत से देशवासियों का लगाव भी और गहरा होगा।**

मेरे प्यारे देशवासियो, देवभूमि उत्तराखंड की कुछ माताओं और बहनों ने जो पत्र मुझे लिखे हैं, वो भावुक कर देने वाले हैं। उन्होंने अपने बेटे को, अपने भाई को, खूब सारा आशीर्वाद दिया है। उन्होंने लिखा है कि उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर रहा 'भोजपत्र', उनकी आजीविका का साधन बन सकता है। आप सोच रहे होंगे कि यह पूरा माजरा है क्या ?

साथियो, मुझे यह पत्र लिखे हैं चमोली जिले की नीति-माणा घाटी की महिलाओं ने। ये वो महिलाएँ हैं, जिन्होंने पिछले साल अक्टूबर में मुझे भोजपत्र पर एक अनूठी कलाकृति भेंट की थी। यह उपहार पाकर मैं भी बहुत अभिभूत हो गया। आखिर हमारे यहाँ प्राचीन काल से हमारे शास्त्र और ग्रन्थ इन्हीं भोजपत्रों पर सहेजे जाते रहे हैं। महाभारत भी तो इसी भोजपत्र पर लिखा गया था। आज देवभूमि की ये महिलाएँ इस भोजपत्र से बेहद ही सुंदर-सुंदर कलाकृतियाँ और स्मृति चिह्न बना रही हैं। माणा गाँव की यात्रा के दौरान मैंने उनके इस यूनिक प्रयास की सराहना की थी। मैंने देवभूमि आने वाले पर्यटकों से अपील की थी कि वो यात्रा के दौरान ज़्यादा-से-ज़्यादा लोकल प्रोडक्ट्स खरीदें। इसका वहाँ बहुत असर हुआ है। आज भोजपत्र के उत्पादों को यहाँ आने वाले तीर्थयात्री काफी पसंद कर रहे हैं और इसे अच्छे दामों पर खरीद भी रहे हैं। **भोजपत्र की यह प्राचीन विरासत उत्तराखंड की महिलाओं के जीवन में खुशहाली के नए-नए रंग भर रही है। मुझे यह जानकर भी खुशी हुई है कि भोजपत्र से नए-नए प्रोडक्ट बनाने के लिए राज्य सरकार महिलाओं को ट्रेनिंग भी दे रही है।**

राज्य सरकार ने भोजपत्र की दुर्लभ प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए भी अभियान शुरू किया है। जिन क्षेत्रों को कभी देश का आखिरी छोर माना गया था, उन्हें अब देश का प्रथम गाँव मानकर विकास हो रहा है। ये

प्रयास अपनी परम्परा और संस्कृति को सँजोने के साथ आर्थिक तरक्की का भी जरिया बन रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में मुझे इस बार काफी संख्या में ऐसे पत्र भी मिले हैं, जो मन को बहुत ही संतोष देते हैं। ये चिट्ठी उन मुस्लिम महिलाओं ने लिखी हैं, जो हाल ही में हज यात्रा करके आई हैं। उनकी ये यात्रा कई मायनों में बहुत खास है। ये वो महिलाएँ हैं, जिन्होंने हज की यात्रा बिना किसी पुरुष सहयोगी या मेहरम के बिना पूरी की है और ये संख्या सौ-पचास नहीं, बल्कि 4 हज़ार से ज़्यादा है। यह एक बड़ा बदलाव है। पहले मुस्लिम महिलाओं को बिना मेहरम, 'हज' करने की इज़ाज़त नहीं थी। मैं 'मन की बात' के माध्यम से सऊदी अरब सरकार का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। बिना मेहरम 'हज' पर जा रही महिलाओं के लिए ख़ासतौर पर वीमेन कोर्डिनेटर्स नियुक्ति की गई थी।

साथियो, बीते कुछ वर्षों में हज पॉलिसी में जो बदलाव किए गए हैं, उनकी भरपूर सराहना हो रही है। हमारी मुस्लिम माताओं और बहनों ने इस बारे में मुझे काफी कुछ लिखा है। अब ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को 'हज' पर जाने का मौका मिल रहा है। 'हज यात्रा' से लौटे लोगों ने, विशेषकर हमारी माताओं-बहनों ने चिट्ठी लिखकर जो आशीर्वाद दिया है, वो अपने आप में बहुत प्रेरक है।

मेरे प्यारे देशवासियो, जम्मू-कश्मीर में म्यूज़िकल नाइट्स हों, हाई एटिट्यूड्स में बाइक रैलीज़ हों, चंडीगढ़ के लोकल क्लब्स हों और पंजाब में ढेर सारे स्पोर्ट्स ग्रुप्स हों, ये सुनकर लगता है, इंटरटेनमेंट्स की बात हो रही है, एडवेंचर की बात हो रही है, लेकिन बात कुछ और है, ये आयोजन एक 'कॉमन कॉज' से भी जुड़ा हुआ है और ये कॉमन कॉज है – ड्रग्स के ख़िलाफ़ जागरूकता अभियान। **जम्मू-कश्मीर के युवाओं को ड्रग्स से बचाने के लिए कई इनोवेटिव प्रयास देखने को मिले हैं। यहाँ म्यूज़िकल**

नाइट, बाइक रैलीज़ जैसे कार्यक्रम हो रहे हैं। चंडीगढ़ में इस मैसेज को स्प्रेड करने के लिए लोकल क्लब्स को इससे जोड़ा गया है। वे इन्हें VADA (वादा) क्लब्स कहते हैं। वादा यानी विक्ट्री अगेंस्ट ड्रग्स एब्यूज, पंजाब में कई स्पोर्ट्स ग्रुप्स भी बनाए गए हैं, जो फिटनेस पर ध्यान देने और नशा मुक्ति के लिए अवेयरनेस कैम्पेन चला रहे हैं। नशे के खिलाफ़ अभियान में युवाओं की बढ़ती भागीदारी बहुत उत्साह बढ़ाने वाली है। ये प्रयास भारत में नशे के खिलाफ़ अभियान को बहुत ताकत देते हैं। हमें देश की भावी पीढ़ियों को बचाना है, तो उन्हें ड्रग्स से दूर रखना ही होगा। इसी सोच के साथ 15 अगस्त, 2020 को 'नशा मुक्त भारत अभियान' की शुरुआत की गई थी। इस अभियान से 11 करोड़ से ज़्यादा लोगों को जोड़ा गया है। दो हफ्ते पहले ही भारत ने ड्रग्स के खिलाफ़ बहुत बड़ी कार्रवाई की है। ड्रग्स की करीब डेढ़ लाख किलो की खेप को जब्त करने के बाद उसे नष्ट कर दिया गया है। भारत ने 10 लाख किलो ड्रग्स को नष्ट करने का अनोखा रिकॉर्ड भी बनाया है। इन ड्रग्स की कीमत 12,000 करोड़ रुपये से भी ज़्यादा थी। **मैं उन सभी की सराहना करना चाहूँगा, जो नशा मुक्ति के इस नेक अभियान में अपना योगदान दे रहे हैं। नशे की लत, न सिर्फ परिवार, बल्कि पूरे समाज के लिए बड़ी परेशानी बन जाती है। ऐसे में यह खतरा हमेशा के लिए ख़त्म हो, इसके लिए ज़रूरी है कि हम सब एकजुट होकर इस दिशा में आगे बढ़ें।**

मेरे प्यारे देशवासियो, जब बात ड्रग्स और युवा-पीढ़ी की हो रही है, तो मैं आपको मध्य प्रदेश की एक इंस्पायरिंग जर्नी के बारे में भी बताना चाहता हूँ। ये इंस्पायरिंग जर्नी है मिनी ब्राज़ील की। आप सोच रहे होंगे कि मध्य प्रदेश में मिनी ब्राज़ील कहाँ से आ गया, यही तो ट्विस्ट है। **एम.पी. के शहडोल में एक गाँव है बिचारपुर। बिचारपुर को मिनी ब्राज़ील कहा जाता है। मिनी ब्राज़ील इसलिए, क्योंकि ये गाँव आज फुटबाल के उभरते सितारों का गढ़ बन गया है।** जब कुछ हफ्ते पहले मैं शहडोल गया था, तो मेरी मुलाक़ात वहाँ ऐसे बहुत सारे फुटबॉल खिलाड़ियों से हुई थी। मुझे लगा कि इस बारे में हमारे देशवासियों को और खासकर युवा साथियों को ज़रूर जानना चाहिए।

साथियो, बिचारपुर गाँव के मिनी ब्राज़ील बनने की यात्रा दो-ढाई दशक

पहले शुरू हुई थी। उस दौरान बिचारपुर गाँव अवैध शराब के लिए बदनाम था, नशे की गिरफ्त में था। इस माहौल का सबसे बड़ा नुकसान यहाँ के युवाओं को हो रहा था। एक पूर्व नेशनल प्लेयर और कोच रईस अहमद ने इन युवाओं की प्रतिभा को पहचाना। रईस जी के पास संसाधन ज़्यादा नहीं थे, लेकिन उन्होंने पूरी लगन से युवाओं को फुटबॉल सिखाना शुरू किया। कुछ साल के भीतर ही यहाँ फुटबॉल इतनी पोपुलर हो गई कि बिचारपुर गाँव की पहचान ही फुटबॉल से होने लगी। अब यहाँ फुटबॉल क्रांति नाम से एक प्रोग्राम भी चल रहा है। इस प्रोग्राम के तहत युवाओं को इस खेल से जोड़ा जाता है और उन्हें ट्रेनिंग दी जाती है। ये प्रोग्राम इतना सफल हुआ है कि बिचारपुर से नेशनल और स्टेट लेवल के 40 से ज़्यादा खिलाड़ी निकले हैं। ये फुटबॉल क्रांति अब धीरे-धीरे पूरे क्षेत्र में फैल रही है। शहडोल और उसके आस-पास के काफ़ी बड़े इलाके में 1200 से ज़्यादा फुटबॉल क्लब बन चुके हैं। यहाँ से बड़ी संख्या में ऐसे खिलाड़ी निकल रहे है, जो नेशनल लेवल पर खेल रहे हैं। फुटबॉल के कई बड़े पूर्व खिलाड़ी और कोच आज यहाँ युवाओं को ट्रेनिंग दे रहे हैं। आप सोचिए, एक आदिवासी इलाका, जो अवैध शराब के लिए जाना जाता था, नशे के लिए बदनाम था, वो अब देश की फुटबॉल नर्सरी बन गया है। इसीलिए तो कहते हैं– जहाँ चाह, वहाँ राह। हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। ज़रूरत है तो उन्हें तलाशने की और तराशने की। इसके बाद यही युवा देश का नाम रौशन भी करते हैं और देश के विकास को दिशा भी देते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज़ादी के 75 साल पूरे होने के अवसर पर हम सभी पूरे उत्साह से 'अमृत महोत्सव' मना रहे हैं। 'अमृत महोत्सव' के दौरान देश में क़रीब-क़रीब दो लाख कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। ये कार्यक्रम एक से बढ़कर एक रंगों से सजे थे, विविधता से भरे थे। इन आयोजनों की एक खूबसूरती ये भी रही कि इनमें रिकॉर्ड संख्या में युवाओं ने हिस्सा लिया। इस दौरान हमारे युवाओं को देश की महान विभूतियों के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला। पहले कुछ महीनों की ही बात करें, तो जन-भागीदारी से जुड़े कई दिलचस्प कार्यक्रम देखने को मिले। ऐसा ही एक कार्यक्रम था– दिव्यांग लेखकों के लिए 'राइटर्स मीट' का आयोजन। इसमें रिकॉर्ड संख्या में लोगों की सहभागिता देखी गई, वहीं आंध्र प्रदेश के तिरुपति में 'राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन' का आयोजन हुआ। हम सभी जानते हैं कि हमारे इतिहास में किलों का, फोर्ट्स का कितना महत्त्व रहा है। इसी को दर्शाने वाला एक कैम्पेन, 'किले और कहानियाँ' यानी

मिट्टी को नमन, वीरों का वंदन

फोट्र्स से जुड़ी कहानियाँ भी लोगों को खूब पसंद आई।

साथियो, आज, जब देश में चारों तरफ 'अमृत महोत्सव' की गूँज है, 15 अगस्त पास ही है, तो देश में एक और बड़े अभियान की शुरुआत होने जा रही है। शहीद वीर-वीरांगनाओं को सम्मान देने के लिए 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान शुरू होगा। इसके तहत देश-भर में हमारे अमर बलिदानियों की स्मृति में अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। इन विभूतियों की स्मृति में देश की लाखों ग्राम पंचायतों में विशेष शिलालेख भी स्थापित किए जाएँगे। इस अभियान के तहत देश-भर में 'अमृत कलश यात्रा' भी निकाली जाएगी। देश के गाँव-गाँव से, कोने-कोने से 7500 कलशों में मिट्टी लेकर ये 'अमृत कलश यात्रा' देश की राजधानी दिल्ली पहुँचेगी। ये यात्रा अपने साथ देश के अलग-अलग हिस्सों से पौधे लेकर भी आएगी। 7500 कलश में आई माटी और पौधों से मिलाकर फिर नेशनल वार मेमोरियल के समीप 'अमृत वाटिका' का निर्माण किया जाएगा। ये 'अमृत वाटिका', 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का भी बहुत ही भव्य प्रतीक बनेगी। मैंने पिछले **साल लाल किले से अगले 25 वर्षों के अमृतकाल के लिए 'पंच प्रण' की बात की थी। 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान में हिस्सा लेकर हम इन 'पंच प्रणों' को पूरा करने की शपथ भी लेंगे। आप सभी, देश की पवित्र मिट्टी को हाथ में लेकर शपथ लेते हुए अपनी सेल्फी को yuva.gov.in पर ज़रूर अपलोड करें। पिछले वर्ष स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'हर घर तिरंगा अभियान' के लिए जैसे पूरा देश एक साथ आया था, वैसे ही हमें इस बार भी फिर से, हर घर तिरंगा फहराना है और इस परम्परा को लगातार आगे बढ़ाना है। इन प्रयासों से हमें अपने कर्त्तव्य का बोध होगा, देश की आज़ादी के लिए दिए गए असंख्य बलिदानों का बोध होगा, आज़ादी के मूल्य का एहसास होगा। इसलिए हर देशवासी को इन प्रयासों से ज़रूर जुड़ना चाहिए।**

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में आज बस इतना ही। अब कुछ ही दिनों में हम 15 अगस्त आज़ादी का ये महान पर्व का हिस्सा बनेंगे। देश की आज़ादी के लिए मर-मिटने वालों को हमेशा याद रखना है। हमें उनके सपनों को सच करने के लिए दिन-रात मेहनत करनी है और 'मन की बात' देशवासियों की इसी मेहनत को, उनके सामूहिक प्रयासों को सामने लाने का ही एक माध्यम है। अगली बार, कुछ नए विषयों के साथ आपसे मुलाकात होगी। बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

मेरी माटी मेरा देश

आज़ादी के अमृत महोत्सव का समापन

“शहीद वीर-वीरांगनाओं को सम्मान देने के लिए ‘मेरी माटी मेरा देश’ अभियान शुरू किया जा रहा है। इस अभियान के तहत देश-भर में ‘अमृत कलश यात्रा’ भी निकाली जाएगी। ये यात्रा अपने साथ देश के अलग-अलग हिस्सों से पौधे लेकर भी आएगी, जिनसे राष्ट्रीय वार मेमोरियल के समीप ‘अमृत वाटिका’ का निर्माण किया जाएगा। ये वाटिका ‘एक भारत-श्रेष्ठ भारत का’ भी बहुत ही भव्य प्रतीक बनेगी।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

आज़ादी के 75 साल और अपने लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास का जश्न मनाने और स्मरण करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 12 मार्च, 2021 को गुजरात में साबरमती से दांडी तक एक प्रतीकात्मक मार्च के साथ ‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ शुरू किया गया था। देश के लोगों और उन लोगों को समर्पित, जिन्होंने भारत को उसकी विकासपरक यात्रा में इतना आगे लाने में महत्त्वपूर्ण भूमि का निभाई है। यह महोत्सव भारतवासियों की भीतरी शक्ति और क्षमता को बनाए रखने के लिए और सम्मानित करने के लिए है। दो वर्षों की अवधि में ‘अमृत महोत्सव’ ने पूरे देश को अपने रंग में रंग लिया और इसमें बड़े पैमाने पर देश भर ने हिस्सा लिया। यह भव्य उत्सव अपने समापन की ओर बढ़ रहा है और सरकार ने न केवल हमारे स्वतंत्रता सेनानियों, बल्कि हमारी भूमि, हमारे राष्ट्र का सम्मान करने के लिए एक और मेगा कैम्पेन ‘मेरी माटी मेरा देश’ शुरू किया है।

अमृत महोत्सव ने दो लाख से अधिक कार्यक्रमों के साथ जन भागीदारी के माध्यम से जन महोत्सव के मंत्र को जागृत किया तथा देश भर में सरकार द्वारा प्रति घंटे नौ अमृत महोत्सव से सम्बन्धित कार्यक्रमों की प्रभावशाली प्रस्तुति से लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जागृत किया और भारत की यात्रा का जश्न मनाया। इस अवधि के दौरान पिछले 75 वर्षों में अपनी समृद्ध परम्पराओं, संस्कृतियों और उपलब्धियों को स्वीकार करते हुए पूरा देश हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्र निर्माताओं का सम्मान करने के लिए एक साथ आया।

अमृत महोत्सव ने दुनिया के सामने भारत की सबसे बड़ी ताकत– इसके लोग, संस्कृति और इतिहास की शक्ति को प्रदर्शित किया, जिससे यह स्वतंत्रता के बाद भारत में सबसे बड़ा जश्न मनाने का प्रयास बन गया। इस यात्रा में न केवल राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों, मंत्रालयों और विभागों की भागीदारी देखी गई है, बल्कि पूरे देश ने हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान करने, भारत की सांस्कृतिक विविधता और विरासत का आनन्द लेने और आत्मनिर्भर भारत बनने की यात्रा को दर्शाते हुए विभिन्न क्षेत्रों में भारत की उपलब्धियों की सराहना की है।

माधवपुर मेला और त्रिवेणी कुम्भ महोत्सव जैसे भूले हुए क्षेत्रीय मेलों और त्योहारों को पुनर्जीवित करके हमारे देश की परम्परा, संस्कृति और विरासत का सम्मान करने का प्रयास किया गया है। कथा वाचन, खिलौना बनाने और कठपुतली जैसी लुप्त होती कला विधाओं को वापस लाने का प्रयास किया गया; काशी-तमिल संगमम् और सौराष्ट्र-तमिल संगमम् के माध्यम से राज्यों के बीच अंतर-सांस्कृतिक सम्बन्धों को फिर से स्थापित करने और उन्हें याद रखने; भारत के पारम्परिक खेलों को फिर से तलाशने तथा पर्यावरण और जल संरक्षण के लिए देश भर में 75,000 अमृत सरोवरों के निर्माण की शुरुआत जैसी पहल की गई। देश ने जन भागीदारी की भावना से प्रेरित कई जन आन्दोलन देखे, जिसमें ‘हर घर तिरंगा’, ‘आज़ादी की रेल गाड़ी और स्टेशन’, ‘मेरा गाँव मेरी धरोहर’, ‘डिजिटल ज्योत’, ‘राष्ट्र गान अभियान’ और ‘यूनिटी इन क्रिएटिविटी’ जैसे अभियान शामिल थे। रंग-बिरंगे और ऊर्जावान माहौल से सराबोर भारत ने इस अमृत महोत्सव से प्रज्वलित अखंड लौ को अपनाया ताकि हम हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के

“मेरी माटी मेरा देश पहल एकता और एकजुटता पर चमकती एक उज्ज्वल रोशनी की तरह है। यह हमारे देश के प्रति अपना प्यार दिखाने और हमारी आज़ादी के लिए लड़ने वालों का सम्मान करने के बारे में है। हम जाति, धर्म और भाषा जैसे मतभेदों को पीछे छोड़कर एक मज़बूत और एकजुट राष्ट्र के रूप में एक साथ आ रहे हैं।”

-निर्मलकांत पांडे
युवा प्रतिभागी

सपनों के भारत का निर्माण कर सकें।

अपने 'मन की बात' के 103वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने अमृत महोत्सव के समापन एपिसोड के रूप में उल्लेखनीय अभियान 'मेरी माटी मेरा देश' की घोषणा की। 'मिट्टी को नमन, वीरों का वंदन' टैगलाइन के साथ देश के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वाले हमारे साहसी शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए एक राष्ट्रव्यापी और लोगों के नेतृत्व वाली पहल के रूप में इसकी कल्पना की गई है। 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान में गाँव और ब्लॉक स्तर, स्थानीय शहरी निकायों के साथ-साथ राज्य और राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम शामिल होंगे।

9 अगस्त, 2023 को शुरू हुए 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान में देश के गाँवों, पंचायतों, ब्लॉकों, कस्बों, शहरों और नगर पालिकाओं ने शिलाफलकम या उनके नाम पर पट्टिकाएँ समर्पित करके अपने स्थानीय बहादुरों का सम्मान किया है। इसके अलावा हमारे राष्ट्र के नायकों के वीरतापूर्ण बलिदानों का सम्मान करने के लिए 'पंच प्रण प्रतिज्ञा', 'वसुधा वंदन' और 'वीरों का वंदन' जैसी पहल भी की जा रही हैं। इस अभियान की एक अन्य प्रमुख विशेषता 'अमृत कलश यात्रा' है, जिसमें देश के कोने-कोने से लोग कुल 7,500 कलशों में अपनी भूमि की मिट्टी ला रहे हैं। विभिन्न क्षेत्रों से पौधों के साथ ये कलश राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के पास एक 'अमृत वाटिका' बनाने के लिए नई दिल्ली की ओर बढ़ रहे हैं, जो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के शक्तिशाली और गौरवपूर्ण प्रतीक के रूप में खड़ा है।

अगले 25 वर्षों तक 'पंच प्रण' का पालन करने के प्रधानमंत्री के आह्वान ने न केवल लोगों को राष्ट्र के प्रति अपने

कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया है, बल्कि इसके लिए मार्ग भी प्रशस्त किया है, जिसे प्रतीकात्मक रूप से 'अमृत काल' या 'कर्त्तव्य काल' कहा जाता है। राष्ट्र की महानता 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान में भाग लेकर नागरिक इन 'पंच प्रण' को पूरा करने की शपथ ले रहे हैं और अपने संकल्प के संकेत के रूप में नागरिक हमारे देश की पवित्र मिट्टी के साथ शपथ लेते हुए अपनी सेल्फी अपलोड कर रहे हैं।

भारत के समृद्ध भविष्य का मार्ग देशवासियों की अपने अतीत की धरोहर को बनाए रखने और सुरक्षित रखने की प्रतिबद्धता और दृढ़ संकल्प से प्रशस्त होता है। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के साथ हम अपने बहादुर स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनके बलिदान और अटूट समर्पण का भी स्मरण करते हैं, जो हमारे देश के इतिहास में रचा-बसा हुआ है। जिस तरह उन्होंने हमारी आज़ादी के लिए लड़ाई लड़ी, उसी तरह यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी परम्पराओं को सँजोकर और अपनी सांस्कृतिक विरासत के सार को संरक्षित करके उनकी विरासत का सम्मान करें। इतना ही नहीं, अगले 25 वर्षों में अपनी आज़ादी के शताब्दी वर्ष तक हम वाइब्रेंट भारत बनें।

मेरी माटी मेरा देश

राष्ट्र की मिट्टी और दिलों की एकता

हमारे देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर नायकों को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए 9 अगस्त, 2023 को पूरे भारत में एक विशेष अभियान 'मेरी माटी मेरा देश' शुरू किया गया। यह अभियान गाँवों, कस्बों और शहरों में आयोजित किया जा रहा है और 30 अगस्त, 2023 तक जारी रहेगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 103वें 'मन की बात' सम्बोधन के दौरान इस अभियान का ज़िक्र किया। इस अभियान का उद्देश्य हमारे शहीद बहादुर वीर और वीरांगनाओं को याद करना और उनका सम्मान करना है, जिन्होंने हमारे देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया।

हमारी दूरदर्शन टीम विभिन्न गाँवों में पहुँची और लोगों से 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान में भाग लेने के लिए उनकी प्रेरणा के बारे में बात की।

सीकर ज़िला, राजस्थान

"पंचायत समिति, पिपराली में 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान चल रहा है, जिसके तहत हमने 75 पेड़ लगाए हैं और बहादुर शहीदों के नाम के साथ एक समर्पित 'शिलाफलकम' स्थापित किया है। इस अभियान की भावना को स्थानीय स्कूलों से भी जोड़ा गया है, जिससे छात्रों में देश के शहीदों के बारे में जानने की जिज्ञासा और देशभक्ति बढ़े। यह अभियान एकता और हमारे शहीदों के सम्मान का प्रतीक है।"

शिशुपाल, ग्राम विकास अधिकारी

"हमारे स्थानीय सरकारी स्कूल में शुरू किए गए 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के ज़रिए देश में हरियाली को बढ़ावा मिलेगा और हमारे छात्रों में देशभक्ति को बढ़ावा मिलेगा, जिससे वे देश के बहादुर शहीदों और सैनिकों का सम्मान करेंगे।"

कमलेश कुमार, स्थानीय निवासी

नारनौल, महेन्द्रगढ़ ज़िला, हरियाणा

"मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम हमारे गाँवों में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें पूर्व सैनिक, सैनिक, गाँवों के पंच-सरपंच और गाँवों की महिलाएँ भी भाग ले रही हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि जन भागीदारी की भावना के साथ यह कार्यक्रम सफल होगा।"

सूबेदार घीसाराम, स्थानीय निवासी

"मेरे गाँव बदरपुर नारनौल महेन्द्रगढ़ ज़िले में अमृत वाटिका का आयोजन किया गया है। हम अपने सभी वीर नायकों के प्रति पूरी प्रतिबद्धता और सम्मान के साथ 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान मना रहे हैं।"

मोनिका शर्मा, स्थानीय निवासी

पंजोखरा साहिब, अम्बाला, हरियाणा

"नेहरू युवा केंद्र अम्बाला और एनएसएस ने वीर नारी हरदीप कौर जी और स्वर्गीय स्वर्णजीत सिंह जी जैसे बहादुर व्यक्तियों, जिन्होंने जम्मू-कश्मीर में अपना सब कुछ बलिदान कर दिया, ऐसे वीरों को सम्मानित करने के लिए खालसा कॉलेज में 'मेरी माटी मेरा देश' कार्यक्रम आयोजित करने के लिए टीम बनाई है। 'मेरी माटी मेरा देश' कार्यक्रम से एकजुट होकर हम नायकों को सम्मान दे रहे हैं और एक उज्ज्वल भविष्य को अपना रहे हैं।"

अर्शदीप कौर, ज़िला युवा अधिकारी, नेहरू युवा केंद्र

"एनएसएस अधिकारियों और नेहरू युवा केंद्र के सदस्यों के सहयोग को देखना रोमांचक है, जो 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के लिए प्रतिज्ञा लेने में एकजुट हुए हैं। ऐसे अभियान की पहल जागरूकता बढ़ाने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में कार्य करती है। इस अभियान के दौरान हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि हमारे स्वतंत्रता सेनानियों की कहानियाँ हर किसी के मन में गूँजें।"

जसमीत कौर, छात्रा और एनएसएस स्वयंसेवक

"एक सेवानिवृत्त भारतीय वायु सेना कर्मी और सैन्य पृष्ठभूमि से होने से मेरा मानना है कि प्रधानमंत्री का 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान देश के लिए बहुत महत्त्व रखता है। हमारे शहीदों के बलिदानों को मान्यता मिलते और उनकी कहानियाँ साझा होते देखना बहुत खुशी की बात है। यह पहल युवाओं को प्रेरित करेगी, देशभक्ति की भावना को बढ़ावा देगी और विश्व स्तर पर भारत की संस्कृति का प्रदर्शन करेगी।"

राकेश मेहता, वायु सेना से सेवानिवृत्त और स्वतंत्रता सेनानी के पोते

राजनांद गाँव ज़िला, छत्तीसगढ़

"हमने 'अमृत वाटिका' के लिए 75 पेड़ लगाकर 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान में भाग लिया है। सभी उम्र के लोगों, विशेषकर युवा छात्रों को ऐसे विशेष अभियान में रुचि लेकर एक साथ शामिल होते देखना अद्भुत है। यह टीमवर्क दर्शाता है कि हम प्रकृति की कितनी परवाह करते हैं और अगली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर दुनिया बनाना चाहते हैं।"

विजय मानिकपुरी, राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई कार्यक्रम अधिकारी

"'मेरी माटी मेरा देश' एक विशेष कार्यक्रम है, क्योंकि यह हमारे उन बहादुर सैनिकों को श्रद्धांजलि है, जिन्होंने हमारे देश के लिए सीमा के भीतर और सीमा पर अपने प्राणों का बलिदान दिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पेड़ लगाना और देश के महान नायकों को सम्मानित करने का एक अनोखा तरीका है। मैं सभी को घर पर एक पेड़ लगाकर इसमें शामिल होने के लिए आमंत्रित करता हूँ। पेड़ों का मतलब जीवन है और उन्हें लगाने से हमारी दुनिया हमारे लिए और भविष्य के लिए बेहतर हो सकती है।"

राकेश ठाकुर, फ़ैसिलिटेटर

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

"इस पहल के तहत हम अपने क्षेत्र में शिलाफलकम् की स्थापना के साथ-साथ हर घर में एक तिरंगा लगा रहे हैं, जो दर्शाता है कि हम सभी एक बड़ा परिवार हैं। इन आयोजनों के माध्यम से हम अपने सशस्त्र बलों की अटूट प्रतिबद्धता को याद करने और उसकी सराहना करने और उनकी निःस्वार्थ सेवा के लिए आभार व्यक्त करते हैं।"

गौरव कुमार, मुख्य विकास अधिकारी

"9 अगस्त, 2023 से देश के विभिन्न गाँवों में लोग 'मेरी माटी मेरा देश' कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। इस अभियान के माध्यम से हम प्रत्येक क्षेत्र में अपने बहादुर नायकों और उनके द्वारा संरक्षित मिट्टी का सम्मान करने के लिए कुछ विशेष प्रयास कर रहे हैं। हमारे क्षेत्र में यह अद्भुत पहल नेहरू युवा केंद्र, प्रयागराज द्वारा समर्थित मदर टेरेसा चैरिटेबल ट्रस्ट, प्रयागराज के सहयोग से की गई।"

जागृति पांडे, ज़िला नेहरू युवा केंद्र अधिकारी

चमोली, उत्तराखंड

"मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम हमारी आज़ादी के एक भव्य उत्सव की तरह है। हर कोई अलग-अलग जगहों से मिट्टी इकट्ठा कर इसमें शामिल हो रहा है। इस मिट्टी का उपयोग हमारे नायकों की याद में अमृत वाटिका बनाने में किया जाएगा। यह हमारे देश की आज़ादी का जश्न मनाने और इसे सम्भव बनाने वालों को धन्यवाद कहने का एक शानदार तरीका है।"

राहुल डबराल, सहायक निदेशक, ज़िला युवा अधिकारी, नेहरू युवा केंद्र

"मेरी माटी मेरा देश अभियान के तहत हमारे क्षेत्र में 75 पौधे लगाए जा रहे हैं। इसमें हमारी नर्सरी से 25 फलदार पौधे और 50 स्थानीय प्रजाति के पौधे प्रत्येक ग्रामसभा को दिए जा रहे हैं, जिनसे एक अमृत वाटिका बनाई जाएगी।"

सर्वेश कुमार दुबे, डीएफओ, केदारनाथ वन प्रभाग

"मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के हिस्से के तहत, हम सक्रिय रूप से विभिन्न विकास खंडों में पेड़ लगाने की प्रक्रिया में लगे हुए हैं। यह सार्थक पहल न केवल हमारे पर्यावरण को साफ़ और सुरक्षित रखने पर केंद्रित है, बल्कि हमारे साहसी शहीदों को श्रद्धांजलि भी देती है। यह सब एक हरित, एकजुट और सम्मानजनक भविष्य के लिए योगदान है।"

कमल सिंह, स्वयंसेवक, नेहरू युवा केंद्र

वृक्षारोपण और जल संरक्षण की अनोखी कहानियाँ

मानसून के मौसम के बीच भारत मिनी ब्राज़ील की तरह एक और उल्लेखनीय परिवर्तन का गवाह बन रहा है, जहाँ वृक्षारोपण और जल संरक्षण की भावनाएँ फल-फूल रही हैं। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' की विरासत के रूप में 60 हज़ार से अधिक अमृत सरोवरों के साथ अपने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए देश की प्रतिबद्धता तेज़ी से स्पष्ट हो रही है। 50 हज़ार से अधिक अमृत सरोवरों के निर्माण का चल रहा प्रयास एक हरित और अधिक उज्ज्वल भविष्य को सुरक्षित करने के सामूहिक संकल्प को दर्शाता है।

मध्य प्रदेश के शहडोल ज़िले के मध्य में पकरिया गाँव के आदिवासी समुदाय की प्रेरक कहानी है। प्रकृति और पानी की रक्षा के आह्वान पर ध्यान देते हुए मेहनती ग्रामीणों ने स्थानीय अधिकारियों के सहयोग से सौ कुओं को शक्तिशाली जल पुनर्भरण प्रणालियों में बदल दिया है। वर्षा का पानी, जो व्यर्थ हो जाता था, अब इन कुओं में गिरता है, धरती में समा जाता है और धीरे-धीरे भूजल स्तर को फिर से भर देता है। इस प्रारम्भिक सफलता से उत्साहित होकर समुदाय ने पूरे क्षेत्र में लगभग 800 कुओं को शामिल करने के लिए इस पहल का विस्तार करने पर ध्यान केंद्रित किया है, जो ज़मीनी स्तर के संरक्षण के एक मॉडल के रूप में काम करेगा।

उत्तर प्रदेश पर्यावरण प्रबन्धन के एक और प्रतीक के रूप में उभरा है, जहाँ एक बड़ी उपलब्धि सामूहिक कार्रवाई की शक्ति को रेखांकित करती है। एक ही दिन में 30 करोड़ पेड़ लगाने का राज्य सरकार का महत्त्वाकांक्षी अभियान न केवल साकार हुआ, बल्कि उससे भी आगे निकल गया, जो शासन और नागरिक भागीदारी के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण को दर्शाता है। यह असाधारण उपलब्धि एक स्थायी कल को आकार देने में सार्वजनिक जागरूकता और सक्रिय भागीदारी की क्षमता का उदाहरण देती है।

कुछ पहलें

अमृत सरोवर की तेजस्विता :

60 हज़ार से अधिक अमृत सरोवर 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' की विरासत, वृक्षारोपण और जल संरक्षण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को उजागर करते हैं।

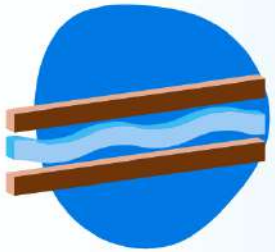

पकरिया गाँव का पुनरुद्धार :

मध्य प्रदेश में पकरिया गाँव का आदिवासी समुदाय कुओं को जल पुनर्भरण प्रणालियों में परिवर्तित करता है, जो भूजल पुन:पूर्ति के लिए ज़मीनी स्तर के भूजल के स्तर को प्रदर्शित करता है।

उत्तर प्रदेश में वृक्षारोपण की विजय :

राज्य सरकार के अभियान के तहत एक ही दिन में रिकॉर्ड तोड़ 30 करोड़ पेड़ लगाए गए, जो सार्वजनिक भागीदारी की क्षमता को उजागर करता है।

हरित कल के लिए सार्वजनिक भागीदारी :

यह पहल भारत के लिए एक स्थायी भविष्य का वादा करते हुए, पर्यावरण संरक्षण को आगे बढ़ाने में सार्वजनिक जागरूकता और सक्रिय भागीदारी की शक्ति को रेखांकित करती है।

"जब हमारा गाँव विकसित होगा, तभी हम विकसित होंगे, हमारे बच्चे विकसित होंगे, हमारा देश विकसित होगा, हमारे गाँव में लगभग 25 कुएँ पुनर्जीवित हुए हैं और ऐसे कुएँ उन जगहों पर हैं, जो सूखी थीं और जिनमें बारिश का पानी भी नहीं पहुँच पाता था।"

अजय पांडे, पकरिया गाँव निवासी

"हमें बहुत खुशी है कि प्रधानमंत्री यहाँ आए और उनके मार्गदर्शन पर हमारे गाँवों में कुओं का जल स्तर बढ़ाने का जो अभियान शुरू हुआ है, उससे हमारे गाँवों को जल संकट से काफ़ी मुक्ति मिलेगी। 'मन की बात' में प्रधानमंत्री द्वारा हमारे गाँवों की चर्चा बहुत उत्साहवर्धक है। इससे किसानों को भी काफ़ी फायदा होगा और जो पानी गर्मियों में सूख जाता था, उसकी उपलब्धता हो जाएगी।"

राजू, पकरिया गाँव निवासी

"'मन की बात' में उल्लेख से उत्तर प्रदेश का पूरा वन विभाग बहुत उत्साहित था और हमें गर्व था कि हमने भी राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रेरणा से चल रहे इस वृक्षारोपण अभियान का उद्देश्य बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण प्रयासों में जनता को शामिल करना है। प्रकृति के प्रति विशेष आकर्षण के साथ, मुख्यमंत्री का दृष्टिकोण इस विचार में निहित है कि उत्तर प्रदेश की 25 करोड़ आबादी सामूहिक रूप से 25 करोड़ पेड़ लगा सकती है, जो जलवायु परिवर्तन के तीव्र प्रभावों का मुकाबला करने के लिए एक सरल और लागत प्रभावी दृष्टिकोण पेश कर सकती है। घरों को हरा-भरा करके और समग्र हरित आवरण को बढ़ाकर, यह कार्यक्रम आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हुए कार्बन पृथक्करण और एनडीसी लक्ष्यों में योगदान करने का प्रयास करता है। अभियान के उद्देश्यों में किसानों की आय बढ़ाना, फलों के पेड़ों को बढ़ावा देना और बागवानी को बढ़ावा देना शामिल है।

इस वर्ष का लक्ष्य : 35 करोड़ वृक्षारोपण हुआ। 22 जुलाई को 30 करोड़ पेड़ लगाए गए, जबकि उत्तर प्रदेश वन विभाग ने विभिन्न विभागों की सहायता से 15 अगस्त को 5 करोड़ पेड़ लगाए। यह महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य अगले 5 वर्षों में कुल 135 करोड़ पेड़ लगाने की प्रत्याशा में निर्धारित किया गया है।"

-ममता संजीव दुबे, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, उ.प्र.

अरुण कुमार सक्सेना

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश में वृक्षारोपण अभियान की सफलता की कहानी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। उन्होंने इस अभियान को सफल बनाने के लिए प्रदेश के सभी मंत्रियों की बैठक बुलाई और कहा कि सभी मंत्री अपने-अपने क्षेत्रों में जाएँ और पेड़ लगाने पर ज़ोर दें। मुख्यमंत्री ने हर एमपी, हर एमएलए, हर मेयर, नगर पालिका चेयरमैन, नगर पंचायत चेयरमैन, ज़िला पंचायत चेयरमैन और इनके सभी सदस्यों को ग्राम प्रधानों के साथ वर्चुअल बैठक की। इस बैठक में लगभग 67 हज़ार लोग जुड़े।

मुख्यमंत्री ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए कि पेड़ लगाने के साथ ही उनके संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाए। उनका निर्देश था कि हर ग्राम सभा में पेड़ लगाने का काम ख़ास तौर से अमृत सरोवरों के किनारे किया जाए। देहात के क्षेत्र में खास तौर पर निर्देश दिया गया कि हर खेत पर मेड़ और हर मेड़ पर पेड़ लगाने के लिए सभी को प्रेरित करें। खेत की मेड़ पर पेड़ लगाने से मेड़ के साथ ही पेड़ भी पानी को रोकेंगे। मुख्यमंत्री ने सभी ग्राम प्रधानों से आग्रह किया कि आज़ादी के 75 साल हो गए हैं और अपने गाँव के अन्दर जो भी तालाब हों, उन पर कम-से-कम 75 पेड़ लगाए जाएँ। उन्होंने कहा कि तालाब के पास अगर पेड़ रहेगा तो तालाब जल्दी सूखेगा नहीं और तालाब में ठंडक रहेगी।

मुख्यमंत्री ने वृक्षारोपण अभियान को लेकर आमजन को भी प्रेरित किया। वन एवं पर्यावरण विभाग द्वारा पेड़ मुफ्त में दिए गए। लोगों को बड़े और फलदार पेड़ दिए गए। पीपल, बरगद, नीम, आम, पाकड़, इमली और आँवला के पेड़ों को वितरित किया गया। विधायकों से भी कहा गया है कि वह अपनी विधायक निधि का 0.5 प्रतिशत पर्यावरण पर खर्च करें। किसानों के लिए मुख्यमंत्री एक योजना लाए हैं, जिसमें मनरेगा का कार्ड धारक अगर अपने खेत में 200 पेड़ लगाता है तो उसे तीन साल में 56 हज़ार रुपये मिलेंगे। ग्राम पंचायतों, ग्राम विकास विभाग ने अपने गाँवों में बड़ी संख्या में पेड़ लगाए।

इसके अलावा पीडब्ल्यूडी विभाग ने नेशनल हाइवे और सड़कों के किनारे पेड़ लगाए, स्कूलों में बच्चों ने पेड़ लगाए, हर सरकारी कर्मचारी और अधिकारी तथा आम जनता ने पेड़ लगाए।

वृक्षारोपण अभियान में आम जनता जुड़ गई है। चाहे वो वकील हो, डाक्टर हो, चार्टर्ड अकाउंटेंट हो, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य हों और अन्य सभी सामाजिक संस्थाओं ने इस बात को समझा कि पेड़ लगाना बहुत ज़रूरी है। पेड़ लगाने के साथ-साथ पेड़ को बचाना भी ज़रूरी है। हर निगम ने अपने यहाँ पेड़ लगाए, हर जगह सरोवर बनाए गए, हर जगह अमृत वाटिका बनाई गई, क्योंकि यह हमारे लोगों के लिए अमृत वर्ष है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कहीं भी जाते हैं, हर जगह एक बात को ज़रूर कहते हैं, ग्लोबल वार्मिंग एंड क्लाइमेट चेंज से धरती का तापमान बढ़ रहा है। क्लाइमेट चेंज से बायोडायवर्सिटी खत्म हो जाएगी, बहुत से पेड़-पौधे और वन्य जीव खत्म हो जाएँगे। यदि तापमान ऐसे ही बढ़ता रहा तो आने वाले समय में सूखा आएगा और कृषि पैदावार कम होगी, नदियों में बाढ़ आएगी और नई-नई बीमारियाँ पैदा होंगी। इन सबको रोकने के लिए ज़रूरी है कि हम ग्लोबल वार्मिंग और क्लाइमेट चेंज को रोकें और रोकने का एक प्रमुख तरीका है कि पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ। इसके साथ ही कार्बनडाईऑक्साइड प्रोडक्शन को भी कम करने के बारे में हमारे यहाँ ध्यान दिया जा रहा है।

सांस्कृतिक जागृति को सक्षम करता

भारतीय विरासत का पुनर्जीवन

“अपनी परम्पराओं, अपनी धरोहरों को जीवंत रखने के लिए हमें उन्हें सहेजना होता है, उन्हें जीना होता है, उन्हें अगली पीढ़ी को सिखाना होता है। मुझे खुशी है कि आज इस दिशा में अनेकों प्रयास हो रहे हैं।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“प्रधानमंत्री जी ने उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय को लेकर जो बात कही है, निःसंदेह वह बहुत महत्त्वपूर्ण और रेखांकित करने वाली है, क्योंकि उज्जैन एक ऐसी नगरी है, जो भारतीय संस्कृति की विरासत की सनातन परम्परा का प्रतिनिधित्व करती है।”

-अमित शर्मा
थिएटर आर्टिस्ट

दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक भारत ने सांस्कृतिक विविधता के विभिन्न रीति-रिवाज़ों और परम्पराओं को अपने अनूठे ताने-बाने में बुना है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक फैला यह देश रीति-रिवाज़ों, भाषाओं, कला-शैलियों, संगीत तथा नृत्य रूपों, खान-पान, पोशाकों, त्योहारों और बहुत कुछ का प्रदर्शन करता है। सिन्धु घाटी सभ्यता के दौरान उभरे और गूढ़ कलाकारी मिट्टी के बर्तनों और मूर्ति कलाकृतियों से लेकर बिहार की स्वदेशी मधुबनी पेंटिंग और शुरुआती कला रूपों में से एक– ओडिशा की पट्टचित्र कला तक, भारत की लोक कला और परम्पराएँ रंगों और विरासत के जीवंत मिश्रण का उदाहरण हैं।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हमारी संस्कृति के कई ज्ञात पहलुओं के बीच हमारी विरासत से जुड़े कई छिपे हुए और भूले-बिसरे पहलू हैं, जिन्होंने हमारे देश के इतिहास और लोकाचार के जटिल चित्रपट में योगदान दिया है और अतीत को वर्तमान के साथ बाँधना जारी रखा है। आने वाली पीढ़ियों के लिए इन ख़जानों को संरक्षित करना और बढ़ावा देना आवश्यक है ताकि भारत विविध सांस्कृतिक पच्चीकारी की इस मनोरम यात्रा को जारी रख सके।

भारतीय कला, संस्कृति और विरासत की इस परिवर्तनशील सुंदरता का प्रचार करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व नेता बनने की भारत की यात्रा में उसकी कालातीत विरासत को संरक्षित करने के महत्त्व को रेखांकित करते हुए, ‘विकास भी, विरासत भी’ का स्पष्ट आह्वान किया। उन्होंने नागरिकों से पंच प्रण लेकर राष्ट्र की पहचान तथा एकता को बढ़ावा देने का आग्रह किया और उन्हें अपनी जड़ों के साथ मज़बूती से जुड़े रहने और औपनिवेशिक मानसिकता को त्यागने पर अपनी ऊर्जा केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे प्रेरित होकर देश भर से लोग भारत की सांस्कृतिक समृद्धि को पुनर्जीवित करने और प्रचारित करने के लिए एक साथ आ रहे हैं। इसे सरकार द्वारा की गई विभिन्न पहलों से भी समर्थन मिल रहा है।

भारतीय विरासत का एक अनिवार्य हिस्सा, यात्राएँ या तीर्थयात्राएँ हैं, जहाँ लाखों भक्त न केवल भारत की आध्यात्मिक परम्परा को जीवित रखने के लिए, बल्कि अपनी आस्था और भक्ति को मज़बूत करने के लिए भी यात्रा पर निकलते हैं। रथ यात्रा, काँवड़ यात्रा, चार धाम यात्रा और अमरनाथ यात्रा, उन कई यात्राओं में से कुछ हैं, जो भारतीय उपमहाद्वीप में अत्यंत श्रद्धा के तीर्थ स्थलों पर समाप्त होती हैं। सरकार ने आस्था की इन कठिन यात्राओं पर जाने वाले तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए और उन्हें आनन्द तथा उल्लास का अनुभव कराने के लिए विभिन्न परियोजनाएँ शुरू की हैं, जैसे प्रसाद योजना (स्वदेश दर्शन और तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक, विरासत संवर्धन अभियान), चार धाम सड़क परियोजना, महाकाल लोक कॉरिडोर, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, बुद्ध तथा जैन सर्किट। सामूहिक सांस्कृतिक जागृति को सक्षम करने के अलावा ऐसी पहल आर्थिक पुनर्विकास भी सुनिश्चित कर रही है। सरकार ने भारतीय तीर्थयात्रियों, विशेष रूप से मेहराम के बिना हज पर जाने वाली महिला तीर्थयात्रियों के लिए हज यात्रा को अधिक आरामदायक, सुविधाजनक और किफ़ायती बनाने के

लिए कई कदम उठाए हैं, जो महिला सशक्तीकरण और भारतीय संस्कृति की बहुलता का प्रतीक हैं।

भारत की सांस्कृतिक विरासत के निश्चित पुनर्जागरण ने विश्व-स्तर पर भी भारत की स्थिति को मज़बूत किया है। हाल ही में स्वदेश वापस लाए गए 300 से अधिक पुरावशेष अपनी रचना में भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ों के प्रतीक हैं और ये उस अपनेपन तथा परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें वे अपने साथ लेकर चलते हैं। स्वदेश लाए गए ये पुरावशेष भारत के सांस्कृतिक ख़ज़ाने की सुरक्षा और उनकी पुनः प्राप्ति करने और उन जड़ों और उनसे विकसित हुए लोगों का सम्मान करने

की सरकार की प्रतिबद्धता के प्रमाण के रूप में खड़े हैं। इतना ही नहीं, भारत आज 40 प्रभावशाली UNESCO विश्व धरोहर स्थलों का दावा करता है, जो भारत को असाधारण विरासत के संरक्षक के रूप में मान्यता देता है।

इस सांस्कृतिक जागृति को अगली पीढ़ी तक ले जाने के लिए इसके साथ अब लोगों की भागीदारी भी जुट गई है। प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के अपने 103वें एपिसोड में उन नागरिकों के प्रयासों की सराहना की, जो भारत की पारम्परिक विरासत के संरक्षण और पुनरुद्धार में लगे हुए हैं। जहाँ उज्जैन में 18 चित्रकार विशिष्ट भारतीय कला शैलियों का उपयोग करके पुराणों पर आधारित आकर्षक चित्र कथा पुस्तकें बना रहे हैं, वहीं चमोली ज़िले की नीति-माणा घाटी की महिलाएँ भोजपत्रों को नया जीवन दे रही हैं, जिन पर महाभारत भी लिखा गया था। रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भारत के विभिन्न कला रूपों को पुनर्जीवित करने के अलावा लोग भारत की ऐतिहासिक और प्राकृतिक विरासत को शाश्वत बनाने के तरीके भी खोज रहे हैं। प्रधानमंत्री ने राजकोट के कलाकार स्वर्गीय प्रभात सिंह मोडभाई बरहाट द्वारा बनाई गई पेंटिंग का हवाला दिया, जिसमें छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग है। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे तमिलनाडु के सुरेश राघवन अपने चित्रों के माध्यम से पौधों और जानवरों के बारे में जानकारी संरक्षित कर रहे हैं, खासकर उनके बारे में, जो विलुप्त होने के कगार पर हैं।

ये छोटे, लेकिन महत्त्वपूर्ण प्रयास भारत की समृद्ध संस्कृति के प्रति गहरी जागृति और इसकी विरासत को संरक्षित करने के लिए लोगों की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। यह अमृत काल हमें अपनी सभ्यतागत विरासत को अपनाने, सुरक्षित रखने, बढ़ावा देने और दुनिया का नेतृत्व करने का अवसर प्रदान करता है।

भारत की खोई हुई विरासत की वापसी

'मन की बात' के 103वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने अमरीका द्वारा सौ से अधिक दुर्लभ और प्राचीन कलाकृतियाँ भारत को लौटाने की बात कही। देश के अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़ी ये दुर्लभ कलाकृतियाँ 2,500 से 250 साल पुरानी हैं। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश विदेशी भूमि से 300 से अधिक कलाकृतियों की सफल वापसी का साक्षी बना है। इससे नागरिकों का अपनी समृद्ध विरासत से जुड़ाव और गहरा होना तय है। आइए हाल के एपिसोड में प्रधानमंत्री द्वारा उल्लिखित कुछ कलाकृतियों पर नज़र डालें :

दुर्गाबाई व्याम
पद्मश्री गोंड कलाकार

विलुप्त होती कला और कहानियों का संरक्षण

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में देश की अनमोल विरासत के संरक्षण में हो रहे अनेक प्रयासों की सराहना की। ऐसी ही एक संरक्षक और कलाकार हैं दुर्गाबाई व्याम। इन्हें 2022 में गोंड कला को पुनर्जीवित करने के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। एक कुशल गोंड कलाकार होने के साथ-साथ वह युवा पीढ़ी को इसे सिखाने का भी प्रयास कर रही हैं और उन्हें कला के माध्यम से भारत की लुप्त हो रही लोक कथाओं से अवगत करा रही हैं।

गोंड पेंटिंग दीवारों पर की जाती है। पहले लाल, काली और रामराज मिट्टी से बने रंगों से शुरुआत हुई और आज एक्रेलिक रंगों का भी प्रयोग किया जाता है। मैं बचपन से शादी-ब्याह, दीवाली और फ़ाल्गुन में सजावट के लिए दीवारों पर माटी के चित्र बनाती थी, पर मुझे गोंड पेंटिंग नहीं आती थी। जब मैं और मेरे पति भोपाल में रहने लगे, तब मैंने जनगढ़ सिंह श्याम से पेंटिंग करना सीखा, वह मेरे गुरु हैं। उन्हीं से मैंने गोंड पेंटिंग सीखी और मेरे पति ने भी मुझे यह कला सिखाई।

हमारी दादी के ज़माने के लोग जिन कहानियों को सुनाते थे, उन पर ख़ासकर मैंने खूब चित्रकारी की है, जैसे देवी-देवताओं की कहानियाँ, बाँस की उत्पत्ति की कहानी, धरती माता की कहानी, जन्म-कर्म के बारे में... गाँव की लुप्त हो

रही कहानियों पर हम कहानियाँ बनाते हैं। अलग-अलग कहानियों में मैं अलग-अलग कलाकृतियाँ बनाती हूँ। सभी चित्रों में एक सन्देश छुपा होता है। पेड़ बचाओ, पानी बचाओ, धरती बचाओ — इन सब चीज़ों के बारे में मैं पेंटिंग बनाती हूँ।

मेरे पति और गुरु ने मुझे सिखाया और अब मैं और बच्चों को गोंड कला सिखा रही हूँ। अपने घर और गाँव के और दूसरे राज्यों के बच्चों को भी सिखाती हूँ। भोपाल, दिल्ली, केरल और अलग-अलग जगह के बच्चों को हमने यह कला सिखाई है। कोविड के समय मैंने केरल के बच्चों को ऑनलाइन भी सिखाया। मुम्बई और चेन्नई के कॉलेज के बच्चों को भी मैं यह कला सिखा रही हूँ, जिससे कॉलेज के बच्चे काफी खुश हैं। मैं और मेरे पति जहाँ भी जाते हैं, वहाँ बच्चों को गोंड कला के माध्यम से जो पुरानी चीज़ें लुप्त हो रही हैं, उसके बारे में जागरूक करते हैं।

अभी मैंने भीमराव आम्बेडकर के बारे एक पुस्तक पर भी काम किया है, जो 11 भाषाओं में छपी है। बच्चों की जो '1,2,3' किताबें होती हैं, इन पर मैंने ज़्यादा काम किया है। मुझे रानी दुर्गावती अवार्ड, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा राज्य-स्तरीय अवार्ड, मुम्बई में विक्रम अवार्ड और दिल्ली में महिला अवार्ड मिले हैं। कत्थक पर किताब बनाने पर इटली से अंतरराष्ट्रीय अवॉर्ड मिला है। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा मुझे बाँस की कहानी के लिए भी अवार्ड मिला है। मेरी कला को सम्मानित करते हुए मुझे 2022 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

'त्योहार और परम्पराएँ हमें गतिशील बनाती हैं'

जून, 2022 में 'मन की बात' के 90वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने उपनिषद् से एक मंत्र उद्धृत किया था — 'चरैवेति-चरैवेति-चरैवेति', जिसका अर्थ है 'चलते रहो'। यह मंत्र हमारे देश की प्रकृति के एक आवश्यक गुण का सार प्रस्तुत करता है, जो है — चलते रहना, गतिशील रहना। हमारी धार्मिक प्रथाएँ भी अलग नहीं हैं, क्योंकि वे भी तीर्थयात्राओं के रूप में गतिशीलता की इस भावना का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के 103वें एपिसोड में बताया कि कैसे हमारे त्योहार और परम्पराएँ हमें गतिशील बनाती हैं। उन्होंने भगवान शिव के उन भक्तों के बारे में बात की, जो सावन के पवित्र महीने में काँवड़-यात्रा करते हैं।

काँवड़-यात्रा शिव भक्तों, जिन्हें काँवड़िए के नाम से जाना जाता है, की वार्षिक तीर्थयात्रा है, जो उत्तराखंड में हरिद्वार, गौमुख, गंगोत्री, बिहार में सुल्तानगंज, उत्तर प्रदेश में प्रयागराज, अयोध्या और वाराणसी जैसे हिन्दू तीर्थ स्थानों तक की जाती है। भक्त काँवड़ में गंगा का पवित्र जल लेकर लौटते हैं, जिससे बाद में भारत भर के 12 ज्योतिर्लिंगों सहित शिव मन्दिरों में जलाभिषेक किया जाता है। प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि इन ज्योतिर्लिंगों तक पहुँचने वाले लोगों की संख्या हर साल रिकॉर्ड तोड़ रही है। हर साल 10 करोड़ से अधिक पर्यटक काशी आते हैं। इससे सामूहिक सांस्कृतिक जागृति के साथ-साथ स्थानीय लोगों के लिए रोज़गार सृजन भी हुआ है।

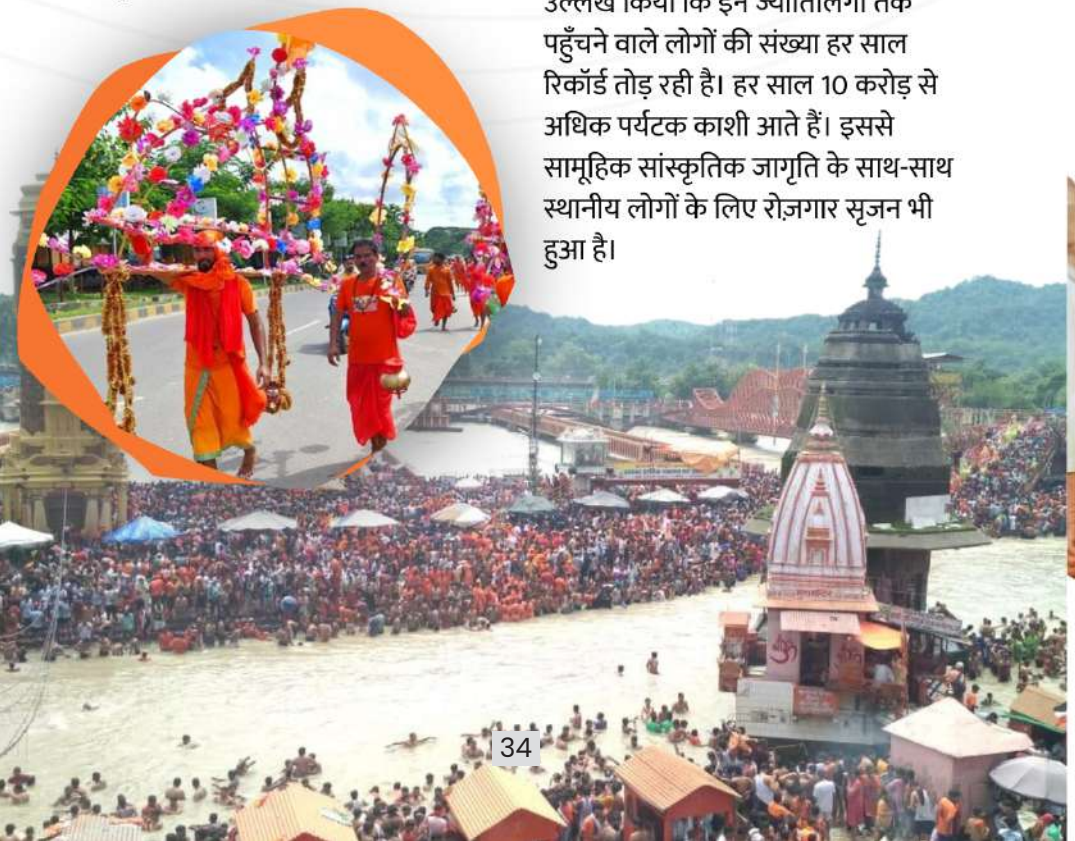

विदेशी अपना रहे हैं भारतीय संस्कृति

प्रधानमंत्री ने बताया कि तीर्थयात्री न केवल भारत के विभिन्न कोनों से, बल्कि दुनिया भर से देश के पवित्र तीर्थस्थलों के दर्शन कर रहे हैं। श्री अमरनाथ यात्रा में देशभर से श्रद्धालु प्राकृतिक रूप से बने बर्फ़ से निर्मित शिव लिंग के दर्शन करने और पूजा-अर्चना करने आते हैं।

3 लाख से अधिक तीर्थयात्रियों के पंजीकरण की रिकॉर्ड-तोड़ संख्या भारतीय परम्परा में इस यात्रा के महत्त्व को रेखांकित करती है। इस यात्रा पर जाने वाले तीर्थयात्रियों के बीच प्रधानमंत्री ने दो अमरीकी नागरिकों पर प्रकाश डाला, जो यात्रा का हिस्सा बनने और अपने जीवन भर के सपने को पूरा करने के लिए आए थे।

"हम श्रीरामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द के भक्त हैं। हम अमरीका के कैलिफोर्निया में एक मन्दिर के आश्रम में रहते हैं और कई वर्षों से हम यहाँ आने का सपना देख रहे थे। स्वामी विवेकानन्द अमरनाथ आए और उन्हें एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अनुभव हुआ। लगभग 40 वर्षों से इस कहानी को जानने के बाद यहाँ आना एक असम्भव सपने जैसा लगता था, लेकिन भोलेनाथ की कृपा से सब कुछ ठीक हो गया और हम यहाँ पूरा दर्शन कर चुके हैं। हम बता नहीं सकते कि हम कैसा महसूस कर रहे हैं। हम उनके दर्शन करने की कृतज्ञता और खुशी में डूबे हुए हैं। इन पहाड़ियों और उस पवित्र गुफा में एक विशेष प्रकार की शांति व्याप्त है और हम आशा करते हैं कि इस प्रकार की शांति हर जगह कायम रहे। यात्रा का आयोजन त्रुटिहीन है। इतने सारे तीर्थयात्रियों के लिए श्राइन बोर्ड ने जिस तरह हर चीज़ की व्यवस्था की है, यह बहुत प्रभावशाली है।"

— क्रिस्टफ़र और हैली, अमरीकी नागरिक

दुनिया भर में भारतीय सांस्कृतिक और ज्ञान प्रणालियों में रुचि बढ़ रही है, चाहे वो अमरनाथ यात्रा करने वाले अमरीकी नागरिक हों या फिर योगाभ्यास करने और सिखाने वाली फ्रांसीसी सौ वर्षीय महिला।

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में फ्रांस में योगाभ्यास करने वाली **शारलेट शोपा** का ज़िक्र किया, जिनसे उनकी हाल ही में पेरिस की यात्रा के दौरान मुलाकात हुई थी। उन्होंने 50 साल की उम्र में योग का अभ्यास शुरू किया और अब दशकों से सभी उम्र के छात्रों को योग सिखा रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में योग और फिटनेस के प्रति शोपा का जुनून बढ़ता ही गया है। 100 साल की इस उम्र में भी वह अपनी सेहत का श्रेय योग को ही देती हैं। आज शोपा दुनिया भर में भारत के योग विज्ञान और उसकी ताकत का एक प्रमुख चेहरा हैं।

डॉ. सुनील वर्मा

सीईओ, श्री काशी विश्वनाथ टेम्पल ट्रस्ट

काशी विश्वनाथ धाम : श्रद्धालुओं के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य

वाराणसी, एक ऐसा शहर, जिसे अमरीकी लेखक मार्क ट्वेन ने "इतिहास से भी पुराना, परम्परा से भी पुराना, किंवदंतियों से भी पुराना और उन सभी को मिलाकर दोगुना पुराना दिखने वाले" शहर के रूप में वर्णित किया था, हमेशा पर्यटकों के बीच लोकप्रिय रहा है परन्तु दिसम्बर, 2021 में जब से काशी विश्वनाथ कॉरिडोर को जीर्णोद्धार के बाद खोला गया है, तब से यहाँ आने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। अब काशी में हर साल 10 करोड़ से भी ज़्यादा पर्यटक पहुँच रहे हैं, जिसका ज़िक्र प्रधानमंत्री ने हाल ही के 'मन की बात' कार्यक्रम में भी किया। श्री काशी विश्वनाथ टेम्पल ट्रस्ट के सीईओ, डॉ. सुनील वर्मा से दूरदर्शन ने इस विषय में बात की और जाना कि धाम श्रद्धालुओं के लिए क्या ख़ास इंतज़ाम करता है।

जब यह धाम बनाया जा रहा था तो यह परिकल्पना की गई थी कैसे इस धाम को भव्य रूप दिया जाए और कैसे श्रद्धालुओं के दर्शन हेतु कुछ परम्परागत चीज़ों को और बढ़ाया जाए, स्थाई रूप से सेवाओं को बढ़ाया जाए। उसी हिसाब से बिल्डिंग प्लान की गई और पूरे कोर्टयार्ड और रास्तों को प्लान किया गया था। हमारा जो अनुमान था, वह यह था कि अगर एक दिन में 10 लाख श्रद्धालु भी आते हैं, तो भी हम उनको सफलतापूर्वक दर्शन कराने में सक्षम होंगे।

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के उद्घाटन के बाद से श्रद्धालुओं की संख्या में प्रति वर्ष वृद्धि हुई है और यह संख्या त्योहारों और सप्ताहांत पर काफी बढ़ जाती है। सामान्य दिनों में भी यह संख्या 1-1.5 लाख के बीच में होती है। अभी हाल में गत सोमवार में लगभग 6.5 लाख लोग आए थे। हर माह यह संख्या बढ़ती ही चली जा रही है। इससे पहले इतनी संख्या नहीं थी।

जो भी लोग काशी आते हैं, उनका एक यह भी लक्ष्य होता है कि वह मन्दिर जाएँ, क्योंकि मन्दिर में अब धार्मिक अनुष्ठान करने के लिए इतनी अच्छी व्यवस्थाएँ हो गई हैं। हमारे कुछ परमानेंट भवन हैं और पेयजल आदि की व्यवस्थाएँ हैं। हमने रुकने के लिए भी वहाँ अतिथिघर बनाया है। हमने जब धाम में सर्विसेज़ बनाई थीं तो हमने हर चीज़ का ध्यान रखा था, चाहे वो फूड कोर्ट हो, म्यूज़ियम हो या कोर्टयार्ड, इन सब चीज़ों को श्रद्धालुओं की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए बनाया गया था।

इस वर्ष चूँकि दो माह का सावन पड़ रहा है तो काशी विश्वनाथ न्यास परिषद् ने उसी तरह की तैयारियाँ की थीं। चूँकि पिछली बार एक महीने में लगभग सवा करोड़ लोग आए थे तो इस बार हम इससे ज़्यादा लोगों के आने का अनुमान लगा रहे थे। अभी हमारे यहाँ लगभग 80 से 90 लाख लोग आ चुके हैं और यह संख्या अभी और बढ़ेगी।

हमने सावन प्रारम्भ होने से पूर्व जब तैयारियाँ शुरू की थीं, तब हमने मुख्य रूप से श्रद्धालुओं को ध्यान में रखकर ही व्यवस्था की थी— चाहे वो बैरिकेडिंग हो या सुगम दर्शन। हमने यह टारगेट बनाया था कि चाहे श्रद्धालु किसी भी दिशा से आएँ, उन्हें हम 25 से 30 मिनट में दर्शन करा दें। चारों गेट्स से अलग-अलग आने की और जाने की कतार भी एक साथ बनाई गई थी। इसी योजना पर हम काफी समय से काम कर रहे थे और हमारे जितने भी स्टेक होल्डर्स थे और स्थानीय पुलिस ने इसी दिशा में काम करते हुए श्रद्धालुओं के अनुभव को सफल बनाया।

काशी विश्वनाथ टेम्पल ट्रस्ट श्रद्धालुओं का अनुभव कैसे सुगम बना रहा है, यह जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन

भारत की कला शिल्प और परम्पराओं का संग्रह

उज्जैन में महाकाल लोक के पास स्थित त्रिवेणी संग्रहालय हमारे देश की संस्कृति, परम्परा और कलाओं का एक अनूठा चित्रण प्रदर्शित कर रहा है। इस संग्रहालय में देश की सांस्कृतिक धरोहर, कलाएँ, मूर्तियाँ आदि देखने को मिलती हैं, जो भारतीय सभ्यता की समृद्धि और महानता का प्रमाण है। अपने हाल के 'मन की बात' के 103वें एपिसोड में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय का ज़िक्र करते हुए कहा कि अपनी संस्कृति, विरासत को अंगीकार करने का उज्जैन में एक अच्छा प्रयास हो रहा है, जिसमें 18 चित्रकार 18 पुराणों पर आधारित आकर्षक चित्र कथाएँ बना रहे हैं। यह चित्र कथाएँ भारत में प्रचलित अलग-अलग कला शैलियों, जैसे बूँदी शैली, नाथद्वारा शैली, पहाड़ी शैली, अपभ्रंश शैली और अन्य विशिष्ट शैलियों में कैनवास पर वाटर कलर से बनेंगे और इन्हें उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय में प्रदर्शित किया जाएगा।

आइए जानते हैं संग्रहालय से जुड़े लोगों के क्या विचार हैं

त्रिवेणी संग्रहालय में कला, साहित्य और संस्कृति का अद्भुत चित्रण है। इस संग्रहालय में कृष्ण, शैव और शक्ति, तीनों की त्रिवेणी है। देश के युवाओं और जितने भी श्रद्धालु उज्जैन दर्शन करने के लिए आते हैं, उन्हें इस संग्रहालय का एक बार विज़िट ज़रूर करना चाहिए। जन-जन तक हमारा ज्ञान और संस्कृति पहुँचेगी, तभी हम हमारी धरोहर पर गर्व महसूस कर सकेंगे।

- शैलेंद्र पाराशर, समाज शास्त्री और कला समीक्षक

लाखों दर्शनार्थी जब किसी तीर्थ स्थल पर जाते हैं तो वह ये सोच के जाते हैं कि वह एक धार्मिक कार्य के लिए प्रस्थान कर रहे हैं। ऐसे में दर्शनार्थी को यदि त्रिवेणी संग्रहालय जाकर कृष्ण, शक्ति और शिव के बारे में विस्तार से जानने का मौका मिले तो मेरा मानना है यह एक जड़ी-बूटी का काम करता है। मैं हमारे युवाओं और बच्चों से आग्रह करता हूँ कि वे सभी इस संग्रहालय में आएँ और हमारी भारतीय संस्कृति की ज्ञान परम्परा से जुड़ें। त्रिवेणी संग्रहालय में आज पूरे देश और बाहर से चित्रकार आते हैं। यहाँ समय-समय पर व्याख्यान होते हैं, नाटक होते हैं, गीत-संगीत होते हैं और यहाँ अलग-अलग प्रकार के वाद्यों को बजाने वाले विद्वद्जन आते हैं, जो हमें अपनी पारम्परिक कलाओं के बारे में जानने का बहुत बढ़िया अवसर प्रदान करता है।

- मयंक शुक्ला, समीक्षक

जब त्रिवेणी संग्रहालय बना था, तब मैंने यहाँ चित्र बनाने का काम किया था और मैं इस जगह को उज्जैन का एक विशेष स्तम्भ मानती हूँ, जहाँ विभिन्न प्रकार की कलाओं का समावेश है। आने वाली पीढ़ी के लिए यह एक ज्ञान प्राप्त करने की जगह होगी। मैं हमेशा अपने परिजनों को यहाँ जाने के लिए बोलती हूँ और जब वे वहाँ जाते हैं तो मुझे बहुत संतुष्टि होती है। मैं इस संग्रहालय को बहुत अद्भुत मानती हूँ।

- कृष्णा वर्मा, संचालिका, मालवा लोक कला केंद्र

भारतीय लघु चित्र शैली के लगभग सभी विषयों पर मैंने काम किया है। अभी हाल ही में भोपाल के संस्कृत विभाग के जनजातीय संग्रहालय द्वारा काम करने के लिए बुलाया गया था, जिसमें मुझे माँ दुर्गा देवी के 108 चित्रों का निर्माण करना था, साथ ही मैंने लिंग पुराण के ऊपर काम किया है, जिसमें 180-200 चित्र बने हैं। मेरी इस शैली की प्रधानमंत्री जी ने जो सराहना की है, मेरे लिए इससे बड़ी बात कुछ नहीं है। मैं उनका बहुत धन्यवाद करता हूँ कि इस कला को उन्होंने सराहा।

- कैलाश शर्मा, चित्रकार

त्रिवेणी संग्रहालय – भारतीय ज्ञान परम्पराओं का एक समावेशी स्थान

गौरव तिवारी, प्रबंधक, त्रिवेणी कला एवं पुरातत्व संग्रहालय (उज्जैन)

त्रिवेणी संग्रहालय में पूरे देश की सांस्कृतिक व पारम्परिक कलाओं पर आधारित चित्रों व मूर्तियों का समावेश है। इस संग्रहालय में भारतीय ज्ञान परम्परा की जो शैव, शाक्त और वैष्णव धाराएँ हैं, उन पर आधारित चित्र मूर्तियों का संग्रह बनाया है। इस संग्रहालय का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह भी है कि उज्जैन के आध्यात्मिक महत्त्व, जिसमें शिव, देवी और कृष्ण का समावेश है, वही तीन आध्यात्मिक परम्पराओं का समावेश त्रिवेणी में भी मिलता है और यही पारम्परिक शाखाएँ अपनी संस्कृति की ओर हमें अग्रसर करती हैं।

त्रिवेणी में भारत के अलग-अलग प्रदेशों की पारम्परिक चित्र शैलियों में भारतीय पुराणों के अध्ययनों और कथाओं का प्रदर्शन किया जाएगा। आप यहाँ आंध्र प्रदेश, पश्चिम राजस्थान और अन्य कई भारतीय क्षेत्रों की चित्रकारी देख सकेंगे। यहाँ आप कला एवं पुरातत्व दोनों संग्रहालय; इसे एक ही भवन में देख सकते हैं। पहले मंजिल में पुरातत्व संग्रह है। फिर आता है सांस्कृतिक पक्ष। इसमें कला परम्परा वाले चित्र व मूर्तियाँ हैं। असल में यह तीनों परम्पराएँ जो हैं, यह संस्कृति की संवाहक हैं और उसी संस्कृति को सहेजने का काम और नई पीढ़ी तक वर्तमान परिवेश में पहुँचाने का काम त्रिवेणी संग्रहालय के माध्यम से हो रहा है, ताकि यह जो लुप्त होती हमारी संस्कृति व परम्पराएँ हैं, उनको बढ़ावा मिले और उनके कलाकारों को प्रोत्साहन मिले। इसी उद्देश्य से कि पूरे देश भर में यह जितनी भी परम्पराएँ हैं, वह आपके माध्यम से देशवासियों तक पहुँचेंगी और आज महाकाल लोक की वजह से त्रिवेणी संग्रहालय में पूरे देश के पर्यटक आने लगे हैं तो कहीं-ना-कहीं पूरे देश की जनता देश भर की कलाओं को एक ही जगह पर देख पा रही है।

त्रिवेणी संग्रहालय में भारतीय परम्परा पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ होती हैं। प्रस्तुतियों में तीन दिवसीय उत्सव होता है और उन प्रस्तुतियों में शास्त्रीय नृत्य, वादन और गायन के कलाकारों को देशभर से आमंत्रित किया जाता है और उनको मंच दिया जाता है। संग्रहालय के माध्यम से हम अलग-अलग नवाचार करने का निरंतर प्रयास करते हैं और प्रधानमंत्री ने पुराणों के चित्रों का ज़िक्र उसी नवाचारी पद्धति के बारे में किया है। उन 18 महापुराण पर आधारित चित्रों पर चित्रकार काम कर रहे हैं। उन चित्रों का प्रदर्शन इसी संग्रहालय भवन में आप निकट भविष्य में देखेंगे। इसके अतिरिक्त नटराज के विविध रूपों पर भी काम चल रहा है, तो ऐसे कई सारे कार्य लगातार किए जा रहे हैं।

त्रिवेणी आर्ट गैलरी में एक प्रदर्शनी वाली दीर्घा है, जिसमें फिलहाल दीपक संग्रह है। यहाँ हम महाशिवरात्रि पर 84 महादेव के चित्र लगाते हैं और ऐसे कई सारे यहाँ पर प्रदर्शन होते हैं। अगर चित्र शैली की बात करें तो यहाँ उड़िया पट्ट चित्र शैली है, केरल की शैली, केरल म्युरल शैली, बाँग्ला की शैली, राजस्थान की पिछवाई शैली और कांगड़ा गुलेर जैसी अन्य पारम्परिक चित्र शैली देख सकते हैं।

हमारे यहाँ पुरातत्व विभाग और संस्कृति विभाग हैं और दोनों एकरूपता से इस भवन के अंदर कार्यरत हैं। केंद्र सरकार और राज्य सरकार के संस्कृति विभाग के सहयोग से यह सब परिलक्षित हो पाया है और इसका संचालन अकादमी के माध्यम से होता है। दोनों जगहों से हमें बहुत अच्छा सहयोग मिल रहा है। सरकार कलाकारों को प्रोत्साहन देने के लिए उनसे शिल्प भी खरीदती है और संग्रहालय जैसे प्लेटफार्म के माध्यम से उनको जनता तक पहुँचाया जाता है, जिससे बहुत सार्थक सहयोग संस्कृति का मिल रहा है।

प्रभात सिंह बारहट

कला के माध्यम से इतिहास का संरक्षण

भारतीय धरोहरों को जीवंत रखने के लिए देश में किए जा रहे प्रयासों की चर्चा करने के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में राजकोट, गुजरात के स्वर्गीय **प्रभात सिंह बारहट** का ज़िक्र किया, जो एक अनोखी पेंटिंग पर काम कर रहे थे। यह पेंटिंग छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन के एक प्रसंग पर आधारित थी, जिसमें प्रभातजी ने शिवाजी महाराज को राज्याभिषेक के बाद अपनी कुलदेवी तुलजा माता के दर्शन करने के लिए जाते हुए दर्शाया है। दूरदर्शन टीम ने प्रभातजी के भाई भागीरथ बारहट से बात की।

"जब मुग़लों के साम्राज्य का दबदबा था और अंग्रेज़ों का प्रवेश हो रहा था, उस समय छत्रपति शिवाजी महाराज ने हिन्दू साम्राज्य के स्थापना की सोच रखी और हिन्दू साम्राज्य स्थापना दिन के अनुसार यह जुलूस निकाला, जिसमें वह मन्दिर जाते हैं और फिर वापस आकर आपनी माताजी के पाँव छूते हैं — यह पूरा प्रसंग इस पेंटिंग में दर्शाया गया है।

जब कोई भी पेंटिंग बनती है तो उसमें यह कुछ बातें ध्यान रखनी होती हैं, जैसे उस दौर के अनुसार शस्त्र, अश्व-सवार, उस समय कैसी उसकी पगड़ी थी, कैसे घोड़े थे। उस समय काठी घोड़े का प्रयोग होता था, जो एक विशेष प्रकार का घोड़ा था। इन सब चीज़ों का अवलोकन प्रभातजी ने किया। उन्होंने तीन बार अरावली पहाड़ियों में प्रवास किया, जिस जगह यह सारा प्रसंग हुआ था और उसके बाद इस पेंटिंग की शुरुआत की।

100 मीटर तक यह पेंटिंग पूरी हो चुकी है, 20 मीटर लाइनिंग-ड्रॉइंग भी है। प्रभातजी ने पहले से ही 6 फ़ुट लम्बी ट्रेसिंग की हुई है, तो जो बुनियादी हिस्सा है, इस प्रोसेशन पेंटिंग का, वो उन्होंने पूरा कर लिया है। अब हमें उसमें रंग भरने हैं और पेंटिंग को आगे बढ़ाना है।

छोटे-से-छोटे आदमी के बारे में सोचना हमारे प्रधानमंत्री की विशेषता है। प्रभातजी ने इस पेंटिंग को अपने बच्चे की तरह बनाया था। प्रधानमंत्री द्वारा प्रभात भाई की पेंटिंग का 'मन की बात' में उल्लेख किए जाने पर हमारे घर में उत्सव जैसा माहौल है। प्रभातजी का सपना इस पेंटिंग को 800 मीटर से भी लम्बा बनाने का था। जब कोई आदमी बड़ा सपना देखता है और उसमें सरकार का साथ मिले तो वह सपना पूरा हो सकता है। राजकोट, गुजरात और राष्ट्र के लिए यह गर्व की बात है कि प्रभात जी द्वारा बनाई गई इस भव्य पेंटिंग को मान मिल रहा है।"

प्रभात सिंह बारहट की चित्रकला के बारे और जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

सुरेश राघवन

कला के माध्यम से प्रकृति सेवा

"कई बार जब हम इकोलॉजी, फ़्लोरा, फ़ॉना, बायोडाइवर्सिटी जैसे शब्द सुनते हैं, तो कुछ लोगों को लगता है कि ये तो स्पेशलाइज्ड सब्जेक्ट हैं, इनसे जुड़े एक्सपर्ट के विषय हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। अगर हम वाकई प्रकृति से प्रेम करते हैं, तो हम अपने छोटे-छोटे प्रयासों से भी बहुत कुछ कर सकते हैं।"

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी (103वीं 'मन की बात' में)

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के एक कलाकार सुरेश राघवन का उल्लेख प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में उनके चित्रों के माध्यम से वनस्पतियों और जीवों के बारे में जानकारी को संरक्षित करने की उनकी अथक दृढ़ता के लिए किया गया था। तमिलनाडु के वडावल्ली के रहने वाले राघवन ने दर्जनों ऐसे पक्षियों, जानवरों, ऑर्किड्स की पेंटिंग बनाई हैं, जो विलुप्त होने की कगार पर हैं।

"मैं प्रकृति के संरक्षण के लिए कुछ योगदान देना चाहता हूँ। इसलिए मैं अपने खाली समय के दौरान लुप्तप्राय जानवरों, पक्षियों और पौधों को चित्रित करता हूँ और उनका दस्तावेज़ीकरण करता हूँ। मैं साइंटिफ़िक प्रकार की पेंटिंग बनाता हूँ। इनमें अंग्रेज़ी और तमिल, दोनों में जैविक नामों के साथ-साथ सामान्य नाम भी शामिल होते हैं। अन्य प्रकार के चित्रों में हम कल्पना का प्रयोग कर सकते हैं, लेकिन इस साइंटिफ़िक पेंटिंग में हमें चित्र केवल वास्तविक अनुपात, रंग और विवरण में ही बनाना होता है, जो काफी चुनौतीपूर्ण है।

एक पेंटिंग को पूरा करने में लगभग चार दिन लगते हैं। मैं पेंसिल से रूपरेखा तैयार करता हूँ और अनुमोदन के लिए वैज्ञानिकों के पास भेजता हूँ। मंज़ूरी मिलने के बाद मैं जलरंगों का उपयोग करके पेंटिंग पूरी करता हूँ। बहुत से वैज्ञानिकों और प्रकृति प्रेमियों ने लुप्तप्राय प्रजातियों के बारे में विभिन्न डेटा प्रदान करके मेरी परियोजना में योगदान दिया है। मैं कहता हूँ, यह किसी एक आदमी का काम नहीं है। यह टीम वर्क है और मैं उनका आभारी हूँ।

मैंने पश्चिमी घाट के 126 स्थानिक पौधों, 50 लुप्तप्राय पक्षियों और 18 ऐसे जानवरों को चित्रित और प्रलेखित किया है। मैंने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के 26 लुप्तप्राय पौधों, भारत के 30 लुप्तप्राय पक्षियों, 46 ऐसे जानवरों को भी चित्रित किया है। इस परियोजना का एकमात्र उद्देश्य भावी पीढ़ियों के बीच लुप्तप्राय प्रजातियों के बारे में जागरूकता पैदा करना है। इसका कोई भी व्यावसायिक पहलू नहीं है।

मैं एक स्थानीय कलाकार हूँ। प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में मेरे ज़िक्र से दुनिया में मेरी पहचान बनी है। प्रकृति को बचाने के एक बहुत छोटे प्रयास के रूप में मैंने यह दस्तावेज़ीकरण का कार्य कोयम्बटूर से शुरू किया था। प्रधानमंत्री ने मुझे पहचाना और मेरा काम दुनिया को दिखाया। मैं जीवन भर उनका आभारी रहूँगा। प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में किए गए इस उल्लेख से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और इसके लिए भी मैं उनका आभारी हूँ।"

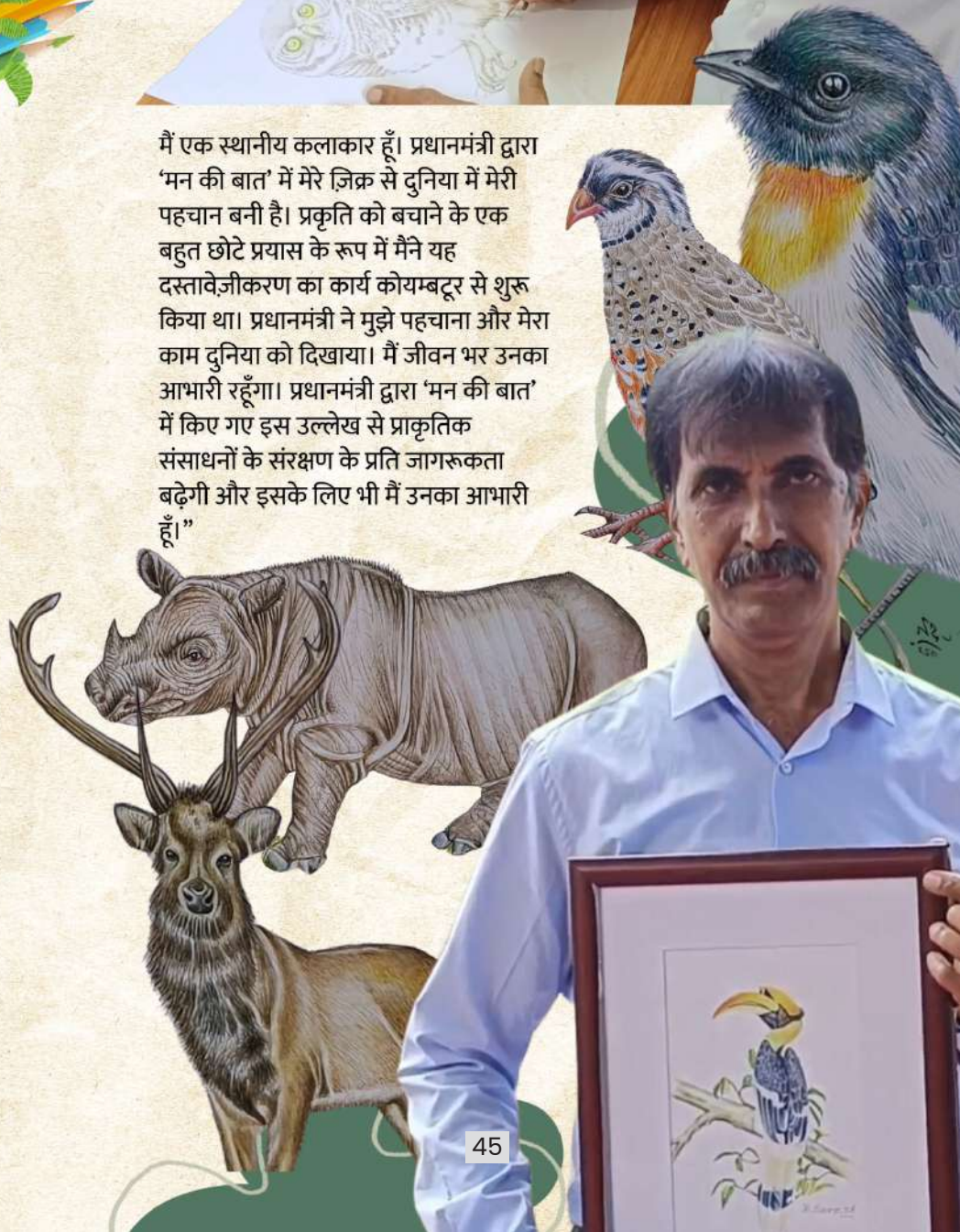

भोजपत्र

भारत की प्राचीन विरासत का पुनर्जीवन

भोजपत्र, पश्चिमी हिमालय की दुर्लभ प्रजातियों में से एक है, जिसका सांस्कृतिक, धार्मिक व ऐतिहासिक महत्त्व भी है। भोजपत्र नीति-माणा घाटी की जनजातीय महिलाओं की आमदनी का ज़रिया है और इसके संरक्षण व संवर्धन के लिए चमोली ज़िला प्रशासन सीमावर्ती पंचायतों में नर्सरी तैयार की जा रही है ताकि लोगों को रोज़गार मिलने के साथ इस दुर्लभ प्रजाति का बचाव भी हो। ज़िला प्रशासन द्वारा भोजपत्र से निर्मित उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए कारगर प्रयास किए जा रहे हैं।

'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने माणा गाँव की महिलाओं द्वारा की जा रही इस पहल की प्रशंसा की और लोगों में भोजपत्र के बारे में जागरूकता उत्पन्न की।

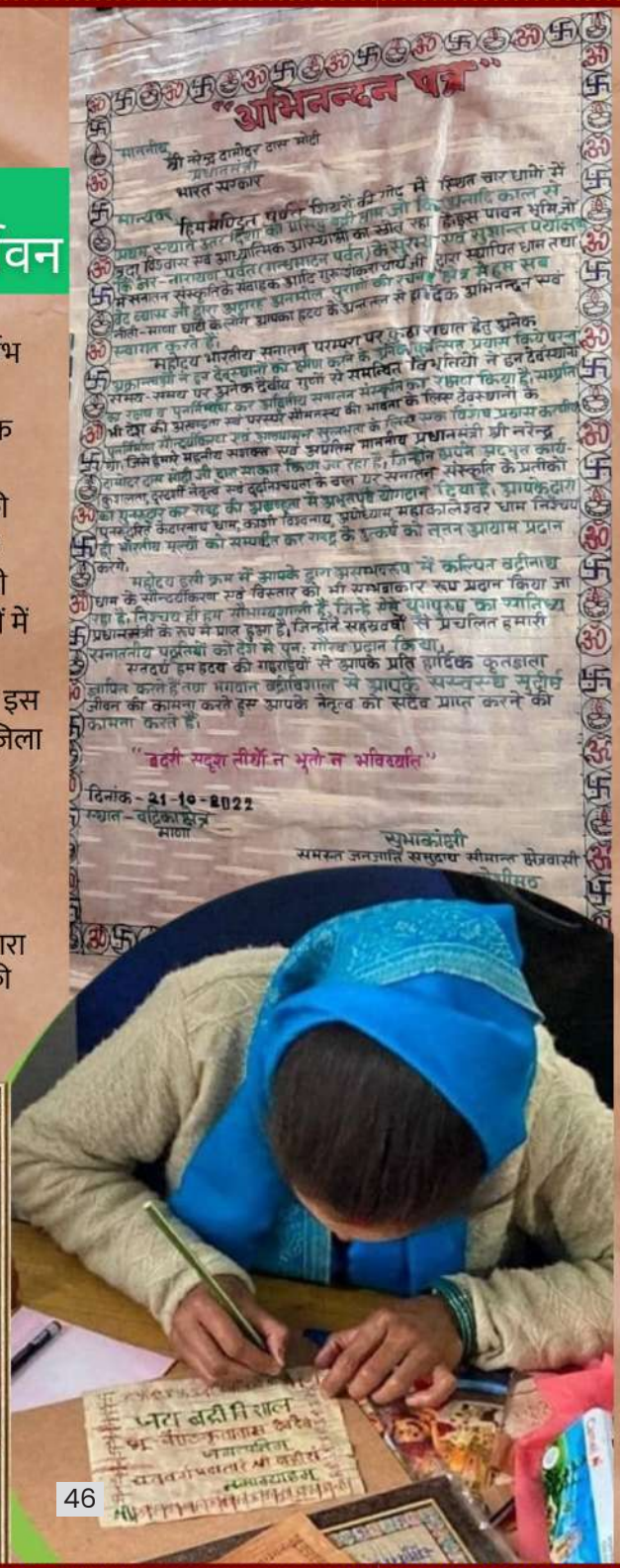

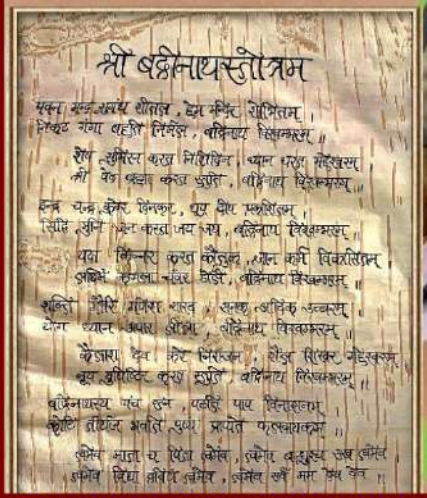

हिमांशु खुराना,
ज़िला अधिकारी, चमोली

"भोजपत्र को स्मृतिचिह्न के रूप में डेवलप करने के लिए हमने माणा और नीति घाटी की स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को नेशनल रूरल लाइवलीहुड के माध्यम से कैलीग्राफ़ी सुलेख प्रशिक्षण प्रदान किया। इन आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से अब तक लगभग 35 से भी ज़्यादा महिलाओं की ट्रेनिंग की जा चुकी है। इसकी गुणवत्ता के लिए हमने देहरादून से एक कैलीग्राफ़ी आर्टिस्ट से सम्पर्क किया है, जिससे हम और भी उच्च गुणवत्ता वाले स्मृतिचिह्न डेवलप करवा सकें। चूँकि भोजपत्र एक दुर्लभ वृक्ष की प्रजाति है, उसके संरक्षण के लिए हमने सीमावर्ती क्षेत्रों के वन पंचायती क्षेत्रों में प्रारम्भिक तौर पर इसका प्लांटेशन शुरू किया है और एक नर्सरी भी स्थापित की जा रही है, जिससे आने वाले समय में इसको डेवलप भी किया जा सके और इसका संरक्षण भी किया जा सके।"

पीताम्बर मोल्फा,
माणा के प्रधान

"भोजपत्र 18,000 फ़ीट की ऊँचाई में पाया जाता है। प्राचीन काल में इन्हीं पत्रों पर अष्टादश पुराण एवं महाभारत की रचना की गई थी। वर्तमान परिवेश में विगत वर्ष 21 अक्टूबर, 2022 को जब भारत के प्रधानमंत्री का माणा गाँव का दौरा हुआ, तब हमने भोजपत्र पर लिखा गया एक अभिनन्दन पत्र उनको भेंट दिया। आज यही हमारी आजीविका का एक स्रोत बन गया है। वर्तमान में हमारे लोग भोजपत्र पर बद्रीनाथ जी की स्तुति, बद्रीनाथ जी की आरती आदि लिख कर समूह के माध्यम से इसको बेच रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि इससे हमारी आजीविका को और भी बल मिलेगा"

अंजू रावत,
स्वयं सहायता समूह कार्यकर्ता

"हमारे यहाँ भोजपत्र के पेड़ उगते हैं, जिनसे हम कई प्रकार के सामान बनाते हैं, जैसे बैज, मालाएँ और पत्र। पिछले साल अक्टूबर में मोदीजी माणा गाँव आए थे और हमारा यह काम देखकर उन्होंने हमें काफ़ी प्रोत्साहित किया। इससे हमें आगे बढ़ने और अपना व्यवसाय चलाने में मदद भी हो रही है। मोदीजी के हमारे गाँव में आने के बाद से भोजपत्र से बनाई हमारी सामग्रियों की मेलों में बहुत डिमांड बढ़ गई। हमारी समूह की औरतें यह सामग्रियाँ बना रही हैं और इस कला का काफ़ी विकास हो रहा है। हम अलग से भोजपत्र का वृक्षारोपण भी कर रहे, जिसमें हम सभी महिलाएँ शामिल हैं।"

मेहरम के बिना हज

मुस्लिम महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक कदम

विविधता और बहुलता भारतीय समाज की परिभाषित विशेषता है। भारतीय लोग तीर्थयात्राओं सहित विभिन्न अनुष्ठानों के साथ विभिन्न धर्मों का पालन करते हैं। हज मुसलमानों द्वारा की जाने वाली एक ऐसी तीर्थयात्रा है, जिसमें पूरी दुनिया के लोग शामिल होते हैं, जैसे कि कैलाश मानसरोवर यात्रा, श्री ननकाना साहिब यात्रा। हज एक पाँच-दिवसीय धार्मिक आयोजन है, जो सऊदी अरब में होता है।

हमारे देश की महिलाओं को हर क्षेत्र में समान अधिकार और अवसर प्रदान करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम में सरकार ने 2018 में हज के लिए यात्रा करते समय मुस्लिम महिलाओं पर मेहरम, या एक पुरुष अभिभावक के साथ जाने पर लगाए गए प्रतिबन्ध में सुधार किया। परिणाम — 2023 में भारत ने हज के लिए मेहरम के बिना यात्रा करने वाली महिला तीर्थयात्रियों की अपनी सबसे बड़ी टुकड़ी भेजी। इस वर्ष 4,314 भारतीय महिलाएँ बिना मेहरम के हज के लिए गईं, जो 2018 में सुधार के बाद से सबसे बड़ी संख्या है।

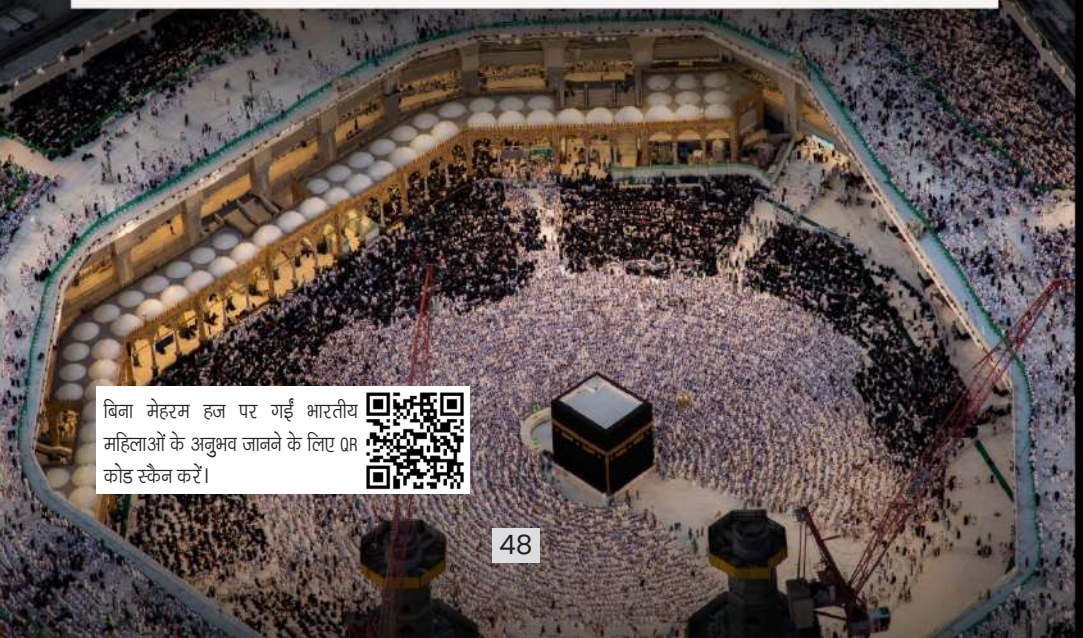

बिना मेहरम हज पर गईं भारतीय महिलाओं के अनुभव जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

"सरकार ने मुस्लिम महिलाओं के बिना मेहरम हज पर जाने के लिए जो कदम उठाए हैं, इससे हमें बहुत अच्छा लगा। आगे भी और महिलाओं को जाने का मौका मिलेगा।"

– निगहत बेग़म, हज यात्री

"यह एक बहुत अच्छी कोशिश है, क्योंकि बहुत सी महिलाएँ हज करने नहीं जा पाती थीं। मैं भी बहुत साल से इस कोशिश में थी और अब-जब मुझे जाने का मौका मिला तो मुझे बहुत अच्छा लगा और बहुत अच्छा रहा सफ़र।"

– नरगिस परवीन, हज यात्री

"महिलाएँ हज करने जा सकीं और वहाँ हम लोगों का एक ग्रुप भी रहा। तो हमने हज तो किया ही, साथ में सफ़र का आनन्द भी लिया।"

– इशरत हसन, हज यात्री

"मुझे बहुत खुशी है कि जुलाई, 2023 में 'मन की बात' के एपिसोड में प्रधानमंत्री ने इस साल हज के हमारे आयोजन की सराहना की। इस बार हमारा हज कोटा 1.75 लाख है, जिसमें से 4,000 से ज़्यादा महिला तीर्थयात्रियों ने बिना मेहरम के हज किया है। मेहरम के बिना का अर्थ है पुरुष अभिभावकों, माता-पिता, संरक्षकों और रक्त सम्बन्धों के बिना। यह एक बहुत बड़ा परिवर्तन है और सही मायनों में महिला सशक्तीकरण है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में हमने अपनी हज नीति में कई सुधार किए, जैसे कोई पंजीकरण शुल्क नहीं, प्रस्थान केंद्र बढ़ाना, कोई वीआईपी कोटा नहीं और निजी कोटा में कमी। सन्देश बिल्कुल स्पष्ट है कि ईश्वर के सामने सभी एक समान हैं।

मैं केरल से हूँ और हमारे यहाँ तीन प्रस्थान केंद्र हैं — कोचीन, कोझिकोड और कन्नूर। पूर्वोत्तर में भी प्रस्थान केंद्र है। 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि उनकी हज के बाद कई महिला तीर्थयात्रियों ने उन्हें पत्र लिखा और मेहरम के बिना यात्रा के अपने अनुभव साझा किए। हज यात्री वास्तव में खुश हैं।"

एपी अब्दुल्लाकुट्टी
अध्यक्ष, राष्ट्रीय हज समिति

नशीले पदार्थों के प्रति जागरूक हो आगे बढ़ रहे हैं युवा

“नशे की लत, न सिर्फ़ परिवार, बल्कि पूरे समाज के लिए बड़ी परेशानी बन जाती है। ऐसे में यह ख़तरा हमेशा के लिए खत्म हो, इसके लिए ज़रूरी है कि हम सब एकजुट होकर इस दिशा में आगे बढ़ें।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“हालिया ‘मन की बात’ सम्बोधन के दौरान प्रधानमंत्री मोदी द्वारा हमारी टीम और मुझे दी गई गहन सराहना को मैं साझा करने के लिए रोमांचित हूँ। इतने महत्त्वपूर्ण मंच पर हमारे प्रयासों को स्वीकार किया जाना और उसका जश्न मनाया जाना वास्तव में खुशी की बात है।”

-समायरा संधू
नशा मुक्त भारत अभियान
चंडीगढ़ अम्बैसडर

भारत की विविध और बढ़ती आबादी के बीच युवाओं का स्थान महत्त्वपूर्ण है, जो आशा, आकांक्षाओं और राष्ट्र को आगे बढ़ाने की क्षमता का प्रतीक है, लेकिन इस आशाजनक परिदृश्य में निराश कर देने वाली बात है– युवा पीढ़ी के बीच नशीले पदार्थों की लत का बढ़ता खतरा। इस गम्भीर मुद्दे पर जागरूक, शिक्षित और युवाओं को उनके भविष्य को सशक्त बनाने वाले विकल्प चुनने के लिए ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है।

2018 में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने 36 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के 2,00,111 परिवारों के बीच मादक पदार्थों के उपयोग की औसत मात्रा, पैटर्न और रुझान पर एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण किया था। इसमें पाया गया कि भारत में सबसे अधिक शराब का सेवन किया जाता है, इसके बाद भांग और अफीम का सेवन किया जाता है। बड़ी संख्या में लोग सेडेटिव और इनहेलेंट जैसे अन्य श्रेणियों के पदार्थों का सेवन करते हैं। देश की आबादी का एक छोटा सा हिस्सा कोकीन, एम्फैटेमिन प्रकार के उत्तेजक पदार्थ और हेलुसीनोजेन का उपयोग करता है।

नशीली दवाओं की लत पर काबू पाने

के इनके खतरों के बारे में जागरूकता पैदा करना आवश्यक है। जागरूकता, जानकारी से भी अधिक कारगर है। यह युवाओं को नशे के प्रति आकर्षित न होने, विवेक से निर्णय लेने और अपने तथा अपने साथियों में नशे की लत के लक्षणों को पहचानने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करती है। भारत सरकार का सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय नशीली दवाओं की माँग में कमी के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीडीडीआर) क्रियान्वित कर रहा है, जो राज्य सरकारों, केंद्रशासित प्रदेशों, गैर सरकारी संगठनों और सामुदायिक संगठनों को निवारक शिक्षा, पुनर्वास केंद्रों, कौशल विकास तथा व्यसन उपचार सुविधाओं और समग्र कल्याण को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहयोग प्रदान करती है।

अगस्त, 2020 में सर्वाधिक संवेदनशील 272 ज़िलों में भारत के युवाओं के बीच नशीली दवाओं की लत की समस्या के समाधान के लिए नशामुक्त भारत अभियान (एनएमबीए) शुरू किया गया था। इसके तहत 8,000 से अधिक मास्टर स्वयंसेवकों को ज़मीनी प्रयासों के माध्यम से 11.99 करोड़ से अधिक लोगों तक पहुँचने वाली गतिविधियों का नेतृत्व करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। 4,000 से अधिक युवा संगठनों के साथ सहयोग, 2.05 करोड़ से अधिक महिलाओं की भागीदारी और 1.19 लाख से अधिक शैक्षणिक संस्थानों के प्रयास महत्त्वपूर्ण रहे हैं। जागरूकता फैलाने और वास्तविक समय डेटा इकट्ठा करने के लिए इस पहल को सोशल मीडिया, मोबाइल ऐप और मणिपाल, क्राइस्ट, वीआईटी तथा तेजपुर जैसे विश्वविद्यालयों के साथ भागीदारी से अंजाम दिया जाता है। 2023 में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) ने स्वस्थ और व्यसन मुक्त भारत को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय अभियान ‘व्यसन मुक्त अमृतकाल’ शुरू किया।

एनएमबीए के लॉन्च के बाद से इस खतरे से निपटने के लिए जन आन्दोलन शुरू किया गया था, जिसके तहत सरकारी और निजी क्षेत्र के विभिन्न हितधारक जागरूकता सृजन और अन्य गतिविधियों में समर्पित रूप से लगे हुए हैं। नशीली दवाओं के व्यसन और अवैध तस्करी रोकथाम अंतरराष्ट्रीय दिवस पर प्रधानमंत्री मोदी ने समाज से

नशीली दवाओं के ख़तरे को खत्म करने के लिए काम करने वाले ज़मीनी-स्तर के योद्धाओं की सराहना की और कहा कि नशीले पदार्थ अपने साथ अंधकार, और विनाश लाते हैं। प्रभावी जागरूकता अभियान बहुआयामी दृष्टिकोण अपना रहे हैं, युवाओं तक पहुँचने के लिए विभिन्न चैनलों का उपयोग कर रहे हैं। स्कूल, कॉलेज, सामुदायिक केंद्र और डिजिटल प्लेटफॉर्म सूचना प्रसारित करने और चर्चाएँ शुरू करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सेमिनार, कार्यशालाएँ, संवाद सत्र और सूचनात्मक सामग्री युवाओं को सीधे तौर पर जोड़ते हैं, समझ और सहानुभूति को बढ़ावा देते हैं। मानवीय कहानियों में जुड़ने और समझने की अद्वितीय क्षमता होती है। ऐसे व्यक्तियों की कहानियाँ साझा करना, जिन्होंने नशे की लत पर विजय प्राप्त की है या इसके विनाशकारी प्रभावों का अनुभव किया है, सहानुभूति का एक पुल बनाता है। ये कहानियाँ सजग करने वाली सामग्री के रूप में काम करती हैं, जो नशीली दवाओं के व्यसन के वास्तविक परिणामों और इससे उबरने की सम्भावनाओं को दर्शाती हैं। डिजिटल युग में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अत्यधिक प्रभाव डालते हैं। इन प्लेटफार्मों पर अभियान, युवाओं का ध्यान खींचने के लिए वीडियो, ग्राफिक्स, चुनौतियों और लाइव सत्र जैसी नवीन रणनीतियों का उपयोग करते हैं। सोशल मीडिया की वायरल प्रकृति यह सुनिश्चित करती है कि जागरूकता सन्देश बड़ी संख्या में दर्शकों तक पहुँचे, जिससे ऐसी बातचीत छिड़ती है, जो मानदंडों और मिथकों को चुनौती देती है।

जागरूकता में महत्त्वपूर्ण बाधाओं में से एक इस लत से लगने वाला कलंक है। ऐसा माहौल बनाना ज़रूरी है, जहाँ मदद माँगने को प्रोत्साहित किया जाए, न कि व्यसन करने वाले व्यक्ति का तिरस्कार किया जाए। मानसिक स्वास्थ्य पेशेवर, शिक्षक और समुदाय के नेता नशे के बारे में बातचीत को सामान्य बनाकर इस कलंक को खत्म करने में

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। नशे से जुड़ी सामाजिक गलतफहमियों और नकारात्मक धारणाओं को चुनौती देने, इसे एक नैतिक विफलता के बजाय जटिल स्वास्थ्य समस्या के रूप में समझने और इससे उबरने के इच्छुक व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति और सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य ऐसा वातावरण बनाना है, जहाँ व्यक्ति मदद माँगने में सहज महसूस करे और आलोचना की बजाय समझ और करुणा के साथ व्यवहार किया जाए।

युवाओं में नशीली दवाओं के व्यसन के खिलाफ़ जागरूकता बढ़ाना सिर्फ एक अभियान नहीं है; यह एक आन्दोलन है। यह एक ऐसा आन्दोलन है, जो युवाओं को नशे की जंजीरों से मुक्त होकर अपने भाग्य का निर्माता बनने का अधिकार देता है। जैसे-जैसे जागरूकता फैलती है, हम एक ऐसी पीढ़ी के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं, जो ज्ञान, परिवर्तनशीलता और भारत को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने के दृढ़ संकल्प से जुड़ा है। खुली बातचीत को बढ़ावा देकर, डिजिटल प्लेटफार्मों का लाभ उठाकर और सहयोगात्मक रूप से काम करके हम ऐसे भविष्य की राह प्रशस्त कर सकते हैं, जहाँ भारत के युवा नशे के खिलाफ़ एकजुट होकर देश को समृद्धि और कल्याण की ओर ले जाएँगे।

नशा मुक्त भारत अभियान : रोकथाम, उपचार, पुनर्वास

डॉ. वीरेंद्र कुमार
सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री

नशीली दवाओं का उपयोग एक जटिल और चुनौतीपूर्ण समस्या है, लेकिन अगर हम एक स्वस्थ और सम्पन्न भारत का निर्माण करना चाहते हैं तो प्राथमिकता के आधार पर इसका समाधान किया जाना चाहिए। माननीय प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में इस मुद्दे पर प्रकाश डाला और इस ख़तरे से निपटने के लिए नशा मुक्त भारत अभियान के तहत उठाए गए कदमों पर चर्चा की। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय नशीले पदार्थों की माँग में कमी लाने के लिए नोडल मंत्रालय है और अपने शासनादेश के तहत, देश में मादक द्रव्यों के सेवन को कम करने के लिए उपाय शुरू करने में लगा हुआ है। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने ड्रग डिमांड रिडक्शन (एनएपीडीडीआर) (2018- 2025) के लिए एक राष्ट्रीय कार्य योजना तैयार करके उसे कानून का रूप दिया। यह योजना केंद्र और राज्य सरकारों और गैर-सरकारी संगठनों के सहयोगात्मक प्रयासों से मादक द्रव्यों पर निर्भरता वाले व्यक्तियों की निवारक शिक्षा, जागरूकता सृजन, पहचान, परामर्श, उपचार और पुनर्वास, सेवा प्रदाताओं के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पर केंद्रित है।

देश में मादक द्रव्यों के उपयोग की समस्या की भयावहता का आकलन करने और जानने के लिए सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा एनडीडीटीसी, एम्स, नई दिल्ली के माध्यम से 'भारत में मादक द्रव्यों के सेवन की तीव्रता' पर एक व्यापक राष्ट्रीय स्तर का सर्वेक्षण आयोजित किया गया, जो 2019 में प्रकाशित हुआ था। इस सर्वेक्षण में देश भर में लगभग 7.1 करोड़ मादक द्रव्य का सेवन करने वाले लोगों के साथ भारत में मादक द्रव्यों के सेवन की समस्या पर प्रकाश डाला गया। मंत्रालय की ओर से जल्द ही दूसरे चरण में राष्ट्रीय सर्वेक्षण शुरू किया जाएगा।

नशा मुक्त भारत अभियान 15 अगस्त, 2020 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा मादक द्रव्यों के सेवन के विरुद्ध देश भर में व्यापक जागरूकता और संवेदनशीलता पैदा करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। एक अभियान मोड का कार्यक्रम होने के नाते, अभियान ने उन हितधारकों को लक्षित और शामिल किया है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मादक द्रव्यों के सेवन से प्रभावित हो सकते हैं और जो इसके प्रति संवेदनशील हैं। एनएमबीए के प्रमुख स्टेक होल्डर और लाभार्थी युवा, महिलाएँ, बच्चे, शैक्षणिक संस्थान, नागरिक समाज और बड़े पैमाने पर समुदाय हैं।

इसके शुभारम्भ के बाद से पूरे देश में कई तरह की गतिविधियाँ आयोजित की गई हैं, जिससे समाज के सभी वर्गों और स्टेक होल्डर्स की भागीदारी को बढ़ावा मिला है। मादक द्रव्यों के सेवन के मुद्दे पर संगठनात्मक भागीदारी के पहले के दृष्टिकोण से सामुदायिक भागीदारी की ओर बदलाव आया है। अभियान में 10.58 करोड़ लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करना राज्यों, ज़िलों और अन्य हितधारकों द्वारा लिए गए उत्तरदायित्व का प्रमाण है, जिसने अभियान को जन आन्दोलन में बदलने में मदद की है। 15 अगस्त, 2023 को इस अभियान को देश के सभी ज़िलों तक प्रसारित कर दिया गया है।

मुख्य रूप से 3.3 करोड़ युवाओं की भागीदारी ने नशा मुक्त भारत अभियान में अद्वितीय सम्भावना, ऊर्जा और सक्रियता का प्रसार किया है। उन्हें अच्छे विकल्प अपनाने के प्रति संवेदनशील और सशक्त बनाने के लिए उनकी भागीदारी बेहद महत्त्वपूर्ण है। अभियान की शुरुआत से लेकर अब तक 2.3 करोड़ से अधिक महिलाओं ने इस अभियान में अग्रणी के रूप में काम किया है। 3.2 लाख शैक्षणिक संस्थानों में छात्रों, शिक्षकों और उनके अभिभावकों की भागीदारी ने इस अभियान के माध्यम से यह सुनिश्चित किया है कि हमारी भावी पीढ़ी इस खतरे से सुरक्षित और संरक्षित रहे।

सोशल मीडिया में जनता तक पहुँचने और सकारात्मक प्रभाव डालने की क्षमता है। नशा मुक्त भारत अभियान के हिस्से के रूप में, खासकर देश के युवाओं के बीच ऑनलाइन उपस्थिति और बड़े पैमाने पर पहुँच बनाने के लिए सोशल मीडिया का प्रभावी ढंग से उपयोग किया गया है।

वर्तमान में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय अनुदान सहायता के माध्यम से देश भर में 588 केंद्रों का सहयोग करता है, जो जरूरतमंद लोगों को परामर्श, उपचार और नशा मुक्ति पुनर्वास सेवाएँ प्रदान करते हैं। इन सभी केंद्रों को उन लोगों तक आसानी से पहुँचने के लिए जियो-टैग किया गया है, जो इन केंद्रों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएँ लेना चाहते हैं।

मंत्रालय नशामुक्ति के लिए एक टोल-फ्री हेल्पलाइन, 14446 भी चलाता है, जो मदद माँगने वाले व्यक्तियों को प्राथमिक परामर्श और तत्काल रेफरल सेवाएँ प्रदान करती है। पहली कॉल से ही योग्य और प्रशिक्षित परामर्शदाताओं द्वारा परामर्श प्रदान किया जाता है।

एक बड़ा सुधार, जो व्यापक रूप से महसूस किया गया है और देखा गया है, वह है नशीली दवाओं के दुरुपयोग और इसकी नकारात्मक धारणा से सम्बन्धित कलंक को दूर करना, जिसने ज़रूरतमंद लोगों के बीच व्यावहारिक तौर पर मदद माँगने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में मदद की है। अभियान के शुभारम्भ से लोगों को उम्मीद जगी है कि मादक द्रव्यों के सेवन को रोकना और उस पर काबू पाना सम्भव है और उनकी भागीदारी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। मुझे यकीन है कि देश के नागरिकों की भागीदारी हमें नशा मुक्त भारत के सपने को साकार करने में मदद करेगी।

मादक द्रव्यों के सेवन से होने वाले विकार के उपचार और नशा मुक्ति सेवाओं तक पहुँचने के लिए QR स्कैन करें

समायरा सन्धू

अभिनेत्री एवं नशा मुक्त भारत अभियान चंडीगढ़ की अम्बैसडर

आशा, उपचार और रिकवरी : एक नशा मुक्त भारत

मैं हालिया 'मन की बात' सम्बोधन के दौरान प्रधानमंत्री मोदी द्वारा हमारी टीम और मुझे दी गई गहन सराहना को साझा करने के लिए रोमांचित हूँ। इतने महत्त्वपूर्ण मंच पर हमारे प्रयासों को स्वीकार किया जाना और उसका जश्न मनाया जाना वास्तव में खुशी की बात है। यह मान्यता हमारे उत्साह को और भी अधिक बढ़ा देती है, क्योंकि यह हमारे समाज को एक सशक्त सन्देश भेजती है। यह सन्देश हमें अपने मिशन और अपने नेक उद्देश्य को तेज़ी से आगे बढ़ाने में मददगार है और अंततः एक नशामुक्त राष्ट्र बनाने के प्रयास के लिए प्रोत्साहित करता है। हम प्रधानमंत्री मोदी और उनके कार्यालय को उनके समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

मुझे नशा मुक्त भारत अभियान का ब्रांड अम्बैसडर होने का सम्माननीय पद प्राप्त है और मुझे इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जुड़े होने पर बहुत गर्व है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा हाल ही में 'मन की बात' में हमारे अभियान का उल्लेख और उनकी उदार सराहना हमारे लिए बहुत महत्त्व रखती है। उनके शब्दों में गहन प्रभाव है और वे जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को प्रभावित करते हैं और इस बात को सम्मान देते हैं कि वह हमारे मिशन को कितना महत्त्व देते हैं।

हमारी समर्पित टीम दिन-रात अथक परिश्रम करती है, जिसका लक्ष्य न केवल चंडीगढ़ में, बल्कि पूरे देश में हमारे नशा मुक्ति प्रयासों को बढ़ाना है। हम कई शिविर, शैक्षिक जागरूकता अभियान आयोजित करते हैं और चंडीगढ़ समाज कल्याण विभाग द्वारा स्थापित नशामुक्ति एक्सप्रेस वैन का उपयोग करते हैं। हमारे पुलिस विभाग और प्रशासन की सक्रिय भागीदारी हमारे उद्देश्य को और भी मज़बूत करती है।

हमारे सामूहिक प्रयास उल्लेखनीय प्रगति कर रहे हैं और मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम अपने देश को नशीली दवाओं की लत के चंगुल से मुक्त कराने में शानदार सफलता प्राप्त करने की राह पर हैं। एक बार फिर मैं इस मुद्दे पर प्रकाश डालने और हमारे सन्देश को बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जो पूरे देश में गूँज रहा है। आपके अटूट समर्थन के लिए धन्यवाद।

सरफ़राज़

अध्यक्ष, सर सैयद एजुकेशन मिशन, जम्मू और कश्मीर

मुक्ति का सफर : संयम के ज़रिए जीवन का सशक्तीकरण

मुझे भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को नशा-मुक्त भारत अभियान का समर्थन करने के लिए हार्दिक बधाई देते हुए खुशी हो रही है, जैसा कि उनके 'मन की बात' सम्बोधन में बताया गया है। मैं पुंछ और जम्मू-कश्मीर क्षेत्र के उल्लेखनीय व्यक्तियों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ, जो पिछले 8-10 वर्षों से हमारे साथ अथक रूप से काम कर रहे हैं। हमने समर्पित रूप से कई बच्चों को परामर्श प्रदान किया है और उन्हें नशे के चंगुल से मुक्त कराने में सफलतापूर्वक मदद की है। इनमें से कई युवाओं को नशा मुक्ति केंद्रों में पुनर्वासित किया गया है। ज़िला समाज कल्याण विभाग, पुंछ, जम्मू और कश्मीर के साथ हमने नशीली दवाओं के दुष्प्रभावों को उजागर करने और जनता के बीच जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए एक बाइक रैली और जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया।

इस मुद्दे की जड़ को पहचानना महत्त्वपूर्ण है। यह मुद्दा सिर्फ़ लोगों की जान लेने का ही नहीं है, बल्कि हमारे युवाओं को इसकी खतरनाक चपेट में फँसाने का भी है। हम सभी को एकजुट होकर भारत को नशामुक्त बनाने में सक्रिय योगदान देना ज़रूरी है। नशा मुक्त भारत अभियान को आगे बढ़ाने में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का नेतृत्व सराहनीय है और यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम उनके पीछे खड़े हों। आइए हम यह सुनिश्चित करने के उनके प्रयासों का तहेदिल से समर्थन करें कि न केवल पुंछ या जम्मू-कश्मीर, बल्कि पूरा भारत नशीली दवाओं की लत के खिलाफ़ लड़ाई में विजयी हो।

मैं युवाओं को यह सन्देश देता हूँ: आइए हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण के साथ खड़े हों, जैसा कि 'मन की बात' में व्यक्त किया गया है और सामूहिक रूप से अपने प्यारे भारत को नशे के चंगुल से मुक्त कराने का प्रयास करें, जिससे हमारे देश के लिए एक उज्ज्वल भविष्य सुरक्षित हो सके।

सब्सटेंस अब्यूज़ से सम्बन्धित मिथक और तथ्य

मिथक		तथ्य
नशीले पदार्थ रचनात्मकता को बढ़ाते हैं और उपयोगकर्ता को अधिक कल्पनाशील बनाते हैं।		यह परिवेश के बारे में उपयोगकर्ता की धारणा और संवेदी उत्तेजनाओं के एकीकरण को बदल देता है।
नशा व्यक्ति की सोचने की क्षमता और एकाग्रता को बढ़ाता है।		ड्रग्स सुस्ती पैदा करते हैं और शरीर और दिमाग की सामान्य कार्यप्रणाली को प्रभावित करते हैं।
शराब पीने के बाद भी व्यक्ति गाड़ी चलाने में सक्षम हो सकता है ।		शराब व्यक्ति की वाणी, ध्यान, समन्वय और संतुलन को प्रभावित करती है।
नशीली दवाओं की लत एक स्वैच्छिक व्यवहार है।		एक व्यक्ति स्वैच्छिक नशीली दवाओं का आदी होने से बाध्यकारी नशीली दवाओं का उपयोग करने वाला बन जाता है।
नशे की लत को ठीक नहीं किया जा सकता।		परामर्श और दवा से लत पर काबू पाया जा सकता है ।
शराब पीना इतना भी ख़तरनाक नहीं।		शराब का दुरुपयोग मृत्यु, दुर्घटनाओं, हमलों शैक्षणिक संघर्षों से जुड़ा है।
मादक द्रव्यों का सेवन निम्न आय वर्ग में मौजूद एक समस्या है।		सब्सटेंस अब्यूज़ की लत एक सामाजिक चिंता है, जो शहरी से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक फैली हुई है।
सब्सटेंस अब्यूज़ करने वालों को पर्याप्त सज़ा नहीं मिलती।		सब्सटेंस-डिपेंडेंट व्यक्ति अत्यधिक हाशिए पर हैं और उन्हें पर्याप्त उपचार की आवश्यकता है।

सब्सटेंस अब्यूज़ के संकेत और लक्षण

यह पहचानने के लिए कि क्या कोई व्यक्ति नशे की लत से पीड़ित है, लक्षणों के बारे में जागरूक होना आवश्यक है, ताकि सहायता प्रदान की जा सके

शारीरिक
लाल या भावहीन आँखें और फैली हुई पुतलियाँ
व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, आदतों और शौक में अचानक परिवर्तन
व्यवहारिक

शारीरिक
खराब शारीरिक समन्वय
क्रोध या चिड़चिड़ापन बढ़ना, अवसाद
व्यवहारिक

शारीरिक
अस्पष्ट भाषण
उदासीन मनोवृत्ति
व्यवहारिक

शारीरिक
नाक बहना या खाँसी
विक्षिप्तता - गम्भीर व्यग्रता
व्यवहारिक

शारीरिक
खराब शारीरिक स्वास्थ्य एवं अस्वच्छता
मूड स्विंग
व्यवहारिक

शारीरिक
खाने की आदत में बदलाव
अत्यधिक हाइपरएक्टिविटी
व्यवहारिक

शारीरिक
वज़न में उतार-चढ़ाव
दोस्तों/परिवार से अलग रहना
व्यवहारिक

भारत का मिनी ब्राज़ील

बिचारपुर की उल्लेखनीय फुटबॉल यात्रा

मध्य प्रदेश के हृदय स्थल में एक गाँव है, जिसने परिवर्तन की एक प्रेरक कहानी लिखी है - बिचारपुर, जिसे 'मिनी ब्राज़ील' के नाम से जाना जाता है। विपरीत परिस्थितियों पर विजय की यह कहानी न केवल मानवीय इच्छाशक्ति की अदम्य भावना को रेखांकित करती है, बल्कि पूरे देश के समुदायों के लिए आशा की किरण के रूप में भी काम करती है। जो गाँव कभी अवैध शराब और लत की चपेट में था, वह अब उभरते फुटबॉल सितारों के लिए एक उभरते हुए केंद्र के रूप में उभरा है, जो ब्राज़ील के फुटबॉल-उत्साही राष्ट्र के उत्साह को प्रतिबिम्बित करता है।

दो दशक पहले, बिचारपुर की चुनौतियों के बीच पूर्व राष्ट्रीय खिलाड़ी और कोच रईस अहमद ने अप्रयुक्त स्थानीय युवाओं की क्षमता को पहचाना। जोश और समर्पण के साथ उन्होंने संसाधन की सीमाओं को पार करते हुए प्रशिक्षण सत्र शुरू किया। परिणाम असाधारण था - थोड़े ही समय में फुटबॉल की प्रमुखता ने बिचारपुर को अपने पर्यायवाची में बदल दिया।

'फुटबॉल क्रांति' कार्यक्रम के आगमन ने इस बदलाव को और तेज़ कर दिया, जिससे युवाओं को खेल के साथ सफलतापूर्वक जोड़ा गया। बिचारपुर की जीत में 40 से अधिक राष्ट्रीय और राज्य स्तर के खिलाड़ी शामिल हैं, जो देश भर में अपनी प्रतिभा को उजागर कर रहे हैं। परिवर्तन की यह लहर सीमाओं से परे चली गई, जिससे शहडोल और पड़ोसी क्षेत्रों में 1,200 फुटबॉल क्लबों को बढ़ावा मिला। इस विस्तार ने अनुभवी पूर्व खिलाड़ियों और कोचों के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने वाले अधिक खिलाड़ियों को प्रेरित किया।

गुमनामी से फुटबॉल उत्कृष्टता तक बिचारपुर की यात्रा हमारे देश के विशाल प्रतिभा पूल को दर्शाती है। यह नियति को आकार देने में समर्पण और व्यक्तिगत लचीलेपन का प्रमाण है। यह आदिवासी क्षेत्र, जो कभी चुनौतियों से घिरा हुआ था, अब आशा और परिवर्तन का प्रतीक है और यह इस कहावत की पुष्टि करता है कि दृढ़ संकल्प ही मार्ग प्रशस्त करता है। जैसे ही ये एथलीट सफल होते हैं, वे न केवल राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा देते हैं, बल्कि समग्र विकास को भी आगे बढ़ाते हैं।

मैं मेरे विनम्र प्रयासों को स्वीकार करने, बिचारपुर गाँव को एक अनुकरणीय उदाहरण के रूप में प्रदर्शित करने और इसे 'मिनी ब्राज़ील' का नाम देने के लिए माननीय प्रधानमंत्री के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। इस समुदाय के बच्चों के भीतर आतंरिक प्रतिभा और शारीरिक कौशल निहित है, जिसे मेरी राय में उचित प्रोत्साहन की आवश्यकता थी। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इन युवाओं में महत्त्वपूर्ण क्षमता है। मेरा ध्यान गेमप्ले पद्धतियों में सुधार करके उनके तकनीकी कौशल को निखारने पर केंद्रित था। विभिन्न परिवारों से कई युवा प्रतिभाओं ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लिया है।

उनके खेलने की शैली अक्सर ब्राज़ीलियाई खिलाड़ियों के साथ समानता दर्शाती है। हमारे सम्मानित आयुक्त श्री राजीव शर्मा ने 'फुटबॉल क्रांति' पहल की शुरुआत करते हुए हमारे प्रयासों को मान्यता दी। इस अभियान ने हमारी ग्राम पंचायत के भीतर 1,000 क्लबों और नगर पालिका में 200-250 क्लबों के निर्माण को बढ़ावा दिया, जिससे बड़े पैमाने पर फुटबॉल प्रतियोगिताएँ शुरू हुईं। उल्लेखनीय रूप से इस आन्दोलन ने 27,000-28,000 से अधिक लड़कों और लड़कियों को खेलों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है, सकारात्मक रूप से उन्हें नशीली पदार्थों के उपयोग और अत्यधिक स्क्रीन समय से दूर रखा है। हमारे अपने एथलीटों ने आस-पास के गाँवों में आउटरीच अभियान शुरू कर दिया है, जो प्रभावी ढंग से दूसरों को मादक द्रव्यों के सेवन के खतरों के बारे में बता रहे हैं।

लगभग दो दशक पहले बिचारपुर में खेल प्रेमियों की मौजूदगी के बावजूद नशीली दवाओं और शराब की लत ने गाँव को परेशान कर दिया था। इन बच्चों के भीतर छिपी क्षमता को पहचानते हुए मैंने गाँव के बुजुर्गों के साथ बातचीत की और बच्चों को नशीली दवाओं पर निर्भरता के गम्भीर परिणामों के बारे में जागरूक किया। मैंने इस बात पर ज़ोर दिया कि कैसे कठोर प्रशिक्षण के साथ-साथ नशीली दवाओं से परहेज़ उनके जीवन को सकारात्मक रूप से बदल सकता है।

उनकी परिवर्तन यात्रा एक कुशल टीम के गठन के साथ समाप्त हुई, जिसमें लड़के और लड़कियाँ; दोनों शामिल थे। आज हमारा ध्यान विशेष रूप से फुटबॉल पर केंद्रित है। हमने भविष्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के लिए उनकी तैयारी की कल्पना करते हुए 3-4 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए एक नर्सरी की स्थापना की है।

रईस अहमद, कोच

मध्य प्रदेश में स्थित इस मिनी ब्राज़ील के बारे में और जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

बिचारपुर में ज़बरदस्त बदलाव हुआ है। जब प्रधानमंत्री शहडोल आए और बच्चों से बातचीत की, उन्होंने इस गाँव को 'मिनी ब्राज़ील' नाम दिया। यही कारण है कि आज यहाँ एक नया माहौल है। इसके तहत यहाँ कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। हमारे युवाओं के मन में उत्साह और नया जोश है।

-जयसिंह मरावी, विधायक, मध्य प्रदेश

हमारे वरिष्ठ सुरेश कुंडे ने इसकी शुरुआत की थी और उनसे पहले उनके पिता और कई अन्य लोग फुटबॉल खेलते थे, जिसके कारण बिचारपुर को मिनी ब्राज़ील के नाम से जाना जाने लगा। नई पीढ़ी ने खेल में असली समर्पण और टीम भावना दिखाई है और आज हमारे बिचारपुर के 35 से 40 लड़के और लड़कियाँ राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी हैं। इससे न तो कोई नशे की तरफ ध्यान देता है और न ही उन्हें यह सब करने का समय मिलता है।

-तेजराम सिंह, वरिष्ठ खिलाड़ी

30-35 वर्ष पहले हमारे युवा नशे की ओर आकर्षित थे। वरिष्ठ खिलाड़ी सुरेश कुंडे और एनआईएस कोच रईस अहमद की पहल से युवाओं की प्रतिभा को पहचान मिली और खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचे। 2020 में हमारे कमिश्नर राजीव शर्मा ने फुटबॉल क्रान्ति की शुरुआत की और पहली बार हमारे बिचारपुर गाँव को पहचान मिली। भविष्य में बच्चे इसका लाभ अवश्य उठाएँगे और अपना और गाँव का नाम रोशन करेंगे।

-अनिल सिंह, कोच

हम पहले कभी यहाँ नहीं आए थे। हमें फुटबॉल के बारे में पता भी नहीं था, तब हमारे खान सर ने हमें बताया कि बिचारपुर को मिनी ब्राज़ील कहा जाता है। तब हमारे अंदर भी बड़ा उत्साह था कि हमें भी खेलना है। हम भी देखना चाहते थे कि बिचारपुर के बच्चे कैसे खेलते हैं। फिर हमने अपनी लड़कियों की टीम बनाई, यहाँ खेले और तब हमें पता चला कि लोग इसे मिनी ब्राज़ील क्यों कहते हैं, क्योंकि यहाँ हर घर के बच्चे फुटबॉल खेलते हैं। यहाँ के बच्चे अब नशे से दूर रहते हैं।

-सुहानी, खिलाड़ी

अशांत अतीत से फुटबॉल पॉवरहाउस में बिचारपुर का परिवर्तन।

कोच और पूर्व राष्ट्रीय खिलाड़ी रईस अहमद ने बिचारपुर के युवाओं में क्षमता को पहचाना।

फुटबॉल क्रांति कार्यक्रम ने गाँव के युवाओं में फुटबॉल के प्रति जुनून जगाया।

बिचारपुर से निकले 40 से अधिक राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय खिलाड़ियों ने अपनी पहचान बनाई।

बिचारपुर की फुटबॉल क्रांति का स्थानीय समुदायों और आस-पास के क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

शहडोल और आस-पास के क्षेत्रों में 1,200 से अधिक फुटबॉल क्लब बने, जिससे खेल की संस्कृति को बढ़ावा मिला।

युवा प्रतिभाओं को आकार देने में प्रसिद्ध पूर्व फुटबॉल खिलाड़ियों और प्रशिक्षकों की भागीदारी रही।

बिचारपुर ने दिया परिवर्तन, प्रतिस्थापन और उज्ज्वल भविष्य की आशा का शक्तिशाली सन्देश।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Anurag Thakur ✓
@ianuragthakur

एक भारत-श्रेष्ठ भारत व देश के अमर शहीदों को उचित सम्मान देने के आदरणीय प्रधानमन्त्री श्री @narendramodi जी के अभियान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए @YASMinistry मेरी माटी-मेरा देश महाअभियान की शुरुआत करने जा रही है।

देश की एकता-अखंडता-भव्यता को गौरवान्वित करने वाले इस महाअभियान से जुड़ें, और इस स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्र व हमारे शहीदों के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करें।

जय हिन्द 🇮🇳
#ManKiBaat

Translate Tweet

12:46 · 30 Jul 23 · **22.5K** Views

Smriti Z Irani ✓
@smritiirani

आज #MannKiBaat में PM @narendramodi जी ने हज यात्रा से लौटने वाली महिलाओं द्वारा चिट्ठियों के माध्यम से साझा किए गए उनके सुखद अनुभवों का उल्लेख किया।

मोदी सरकार द्वारा हज नीति में लाए गए अनेकों बदलावों के कारण हज यात्रा सुगम हुई है और इससे मुस्लिम महिलाओं को विषेश लाभ मिला है।

Translate Tweet

14:02 · 30 Jul 23 · **49.3K** Views

India in France ✓
@IndiaenFrance

Lors du #MannKiBaat, le Premier ministre @narendramodi déclare 'Récemment, lorsque je suis allé en France, j'ai rencontré Charlotte Chopin qui est une praticienne et une enseignante de yoga, qui pratique le yoga depuis 40 ans. Elle attribue sa santé et sa longévité au yoga.'

Translate Tweet

Arindam Bagchi and 4 others

India in USA ✓
@IndianEmbassyUS
Following

" I thank the U.S. Government which has returned this precious heritage to us. I am sure that such efforts will increase awareness across the country to stop the theft of our cultural heritage. This will further deepen the connection of our countrymen with our rich heritage" – Prime Minister @narendramodi

Taranjit Singh Sandhu and 2 others

2:14 · 31 Jul 23 · **20.5K** Views

Dharmendra Pradhan ✓
@dpradhanbjp

ଅନୁଗୋଳ ଓ ଢେଙ୍କାନାଳ ଜିଲ୍ଲା ସମେତ ଓଡ଼ିଶାର ଅନେକ ସ୍ଥାନରେ ଆଜି ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ @narendramodi ଙ୍କ #MannKiBaat କୁ ନାଗରିକମାନେ ଶୁଣିଛନ୍ତି । ସେ ଆଜି ଜଳ ସଂରକ୍ଷଣ, ବୃକ୍ଷରୋପଣ ଭଳି ସାମାଜିକ ସଚେତନତାର ବାର୍ତ୍ତା ଦେଇଛନ୍ତି । ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଆହ୍ୱାନ କ୍ରମେ 'ହର୍ ଘର୍ ତ୍ରିରଙ୍ଗା' ପରମ୍ପରାକୁ ଜାରି ରଖିବା ସଙ୍ଗେସଙ୍ଗେ 'ମେରି ମାଟି, ମେରା ଦେଶ' ଅଭିଯାନରେ ସାମିଲ ହେବା ।

Translate Tweet

21:02 · 30 Jul 23 · **8,105** Views

Piyush Goyal ✓
@PiyushGoyal
Following

इस बार भी हमे हर घर तिरंगा फहराना हैं, और इस राष्ट्र आराधना की परंपरा को लगातार आगे बढ़ाना हैं 🇮🇳

Translate Tweet

12:54 · 30 Jul 23 · **65.3K** Views

Nasha Mukt Bharat A... ✓
@NMBA_MSJE
Following

Hon'ble Prime Minister Narendra Modi ji emphasises on Nasha Mukt Bharat Abhiyaan in 'Mann ki Baat' on 30th July 2023 episode. It is a call for the whole country to join in the Abhiyaan. @PMOIndia @narendramodi @HMOIndia @AmitShahOffice @MSJEGOI #NMBA #drugfreeindia

13:55 · 30 Jul 23 · **14.5K** Views

Yoganand Gajjala @yoganand_bjp · Jul 30
Thank you for bringing back our precious antiquities and artifacts. Gratitude to the USA Government for their assistance in preserving and returning our cultural symbols. India stands proud. #MannKiBaat

> Narendra Modi @narendramodi · Jul 30
> Every Indian is proud when precious antiquities and artefacts which were stolen are making their way back home. India is also grateful to the USA Government for their role in ensuring the return of these prized cultural symbols.
> #MannKiBaat

Yogi Adityanath ✓
@myogiadityanath
Following

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने आज #MannKiBaat कार्यक्रम में, उत्तर प्रदेश में बीते 22 जुलाई को हुए रिकॉर्ड 30 करोड़ पौधरोपण का उल्लेख कर पर्यावरण संरक्षण हेतु 'जन-भागीदारी' के महत्व को रेखांकित किया है।

प्रधानमंत्री जी! आपकी प्रेरणा से यहां पौधरोपण 'जन-आंदोलन' का रूप ले चुका है। हम सभी हरित उत्तर प्रदेश के निर्माण हेतु भरपूर प्रयास कर रहे हैं। उसी क्रम में 77वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भी 05 करोड़ पौधरोपण हेतु संकल्पित हैं।

आज उत्साहवर्धन के लिए सभी प्रदेश वासियों की ओर से आपका हार्दिक आभार!

Shivraj Singh Chouhan @ChouhanShivraj Following

मध्यप्रदेश के शहडोल में एक गाँव बिचारपुर है, जिसे Mini Brazil कहा जाता है। मिनी ब्राजील इसलिए,क्योंकि यह गाँव आज फुटबाल के उभरते सितारों का गढ़ बन गया है। : आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी #MannKiBaat

Translate Tweet

12:35 · 30 Jul 23 · **11.7K** Views

Usha Bajpai @BajpaiUsha · Jul 30

Today in Pune organised & heard the 103rd edition of respected Prime Minister Shri @narendramodi ji's #MannKiBaat speech with the Doctors in Indira IVF center, Viman Nagar .

The Prime Minister has played an important role in the rise of global respect for the invaluable... Show more

5 14 241

Amitabh Bhattacharjee @AmitabhBJP · Jul 30

Finally, a victory that feels like a historic home run! These artifacts deserve their rightful place in our culture-rich India. Props to the USA Government, making cultural reunions happen. Historical pride intact! #MannKiBaat

Narendra Modi @narendramodi · Jul 30

Every Indian is proud when precious antiquities and artefacts which were stolen are making their way back home. India is also grateful to the USA Government for their role in ensuring the return of these prized cultural symbols.
#MannKiBaat

2 60

J&K Panchayat Secretaries @panchayat_j

Honourable @PMOIndia launched a unique campaign called 'Meri Maati, Mera Desh' during his 103rd edition of Mann Ki Baat. Meri Maati Mera Desh is a 21-day campaign to pay tribute to the brave people who sacrificed their life for the country.

youtube.com
Meri Maati Mera Desh" campaign across J&K UT Panchaya...
Meri Maati Mera Desh" campaign is envisaged from 9th August 2023 as a culminating event of 'Azadi Ka ...

9:41 PM · Aug 9, 2023 · **89** Views

1 Repost **6** Likes

Pushkar Singh Dhami @pushkardhami

आज 'मन की बात' कार्यक्रम में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने जनपद चमोली की नीती-माणा घाटी की महिलाओं द्वारा लिखे गए पत्र का जिक्र किया। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा देश के प्रथम गांव माणा से की गई अपील का ही परिणाम है कि आज यहां आने वाले तीर्थयात्री भोजपत्र के उत्पादों सहित अन्य स्थानीय उत्पादों को अच्छे दामों पर खरीद रहे हैं।

भोजपत्र देवभूमि उत्तराखण्ड की प्राचीन विरासत का हिस्सा है। हमारी सरकार प्रदेश की समस्त सांस्कृतिक विरासतों को संरक्षित एवं संवर्धित करने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है।

Translate Tweet

Last edited 11:53 AM · Jul 30, 2023 · **10.1K** Views

K.Annamalai @annamalai_k

It was delightful to listen to our Hon PM Thiru @narendramodi avl's 103rd #MannKiBaat along with the brothers & sisters of Selvanayagapuram village in Ramanathapuram today.

It is a proud moment for every Tamilian to know through our Hon PM about Thiru Suresh Raghavan, an artist from Vadavalli, who is known for providing detailed descriptions of birds & animals he paints while documenting them.

Annapurna Devi @Annapurna4BJP

आज #MannKiBaat के दौरान प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने अमरनाथ यात्रा पर आए अमेरिकी पर्यटकों का जिक्र किया।

#मन_की_बात

Translate post

11:37 AM · Jul 30, 2023 · **224** Views

PM: Inscriptions to be installed in panchayats to hail martyrs

Launches 'Meri Mati Mera Desh' Campaign Ahead Of I-Day

Times News Network

New Delhi: PM Narendra Modi on Sunday announced the launch of the 'Meri Mati Mera Desh' campaign in the run-up to Independence Day to honour martyred bravehearts of the country with special inscriptions to be installed in panchayats in their memory.

In his monthly radio talk 'Mann Ki Baat', the PM said 'Amrit Kalash Yatra' will be organised under the campaign and 7,500 pots carrying soil from different parts of the country will be brought to the national capital along with saplings.

'Amrit Vatika will be built near the National War Memorial by fusing the soil and saplings that will arrive in 7,500 urns. This 'Amrit Vatika' will become a grand symbol of 'Ek Bharat Shresth Bharat'," he said. Under the ongoing Amrit Mahotsav to mark the 75th anniversary of independence over two lakh programmes have been organised. 'Meri Mati Mera Desh' will recall the memory of those brave men and women who laid down their lives for the country, the PM said.

Saying the whole country came together for the 'Har Ghar Tiranga' campaign last year, Modi urged people to continue the tradition of hoisting the tricolour at their houses this time too. "With these efforts, we will realise our duties, we will realise the innumerable sacrifices made for the freedom of the country, we will realise the value of freedom. Hence, every person in the country must join in these efforts," he added.

Referring to floods, landslides and other natural calamities hitting different parts of the country during the monsoon season, he said people suffered at many places. Amid the natural calamities, people also brought to the fore the power of collective effort, he said.

Modi said it was encouraging to see people make novel efforts for water conservation at many places. He cited the record plantation of 30 crore saplings in a day in Uttar Pradesh, saying it was an example of public participation and awareness.

Over 60,000 'Amrit Sarovars' built during the 'Azadi ka Amrit Mahotsav' were helping in water conservation during the rainy season, he said, adding that over 50,000 more ponds were being built.

Modi said during his recent visit to France, he met Charlotte Chopin, a yoga teacher who was more than 100 years old. "She gives credit for her health and this age of 100 years only to yoga. She has become a prominent face of India's science of yoga," he said.

A soldier on guard at the 'Amar Jawan Jyoti'. Amrit Vatika will be built near the National War Memorial, PM Modi said in Mann Ki Baat

स्वतंत्रता दिवस पर मेरी माटी, मेरा देश अभियान

मन की बात : पीएम मोदी बोले-बलिदानियों की याद में दिल्ली में बनेगी अमृत वाटिका

7,500 कलशों में देश के गांव-गांव से दिल्ली पहुंचेगी मिट्टी और पौधे

गांवों में स्थापित किए जाएंगे शिलालेख, अपलोड करें सेल्फी

4,000+ Muslim women went on Haj without male companion: PM

New Delhi: PM Narendra Modi on Sunday said he has received a large number of letters from Muslim women who went on Haj pilgrimage without mehram (male companion). Sharing that reading these letters has given him immense satisfaction as more than 4,000 women went on Haj in this category this year, the PM said, this reflects a "huge transformation".

"Through Mann Ki Baat, I also express my heartfelt gratitude to the government of Saudi Arabia. Women coordinators were specially appointed for women going on 'Haj' without Mehram," the PM added.

The PM further said that the changes that have been made in the Haj policy in the last few years are being highly appreciated. "The blessing given by the people who have returned from Haj pilgrimage, especially our mothers and sisters through their letters, is very inspiring in itself," he said. TNN

Up to 65% rise in Kashi's tourism-related income

Times News Network

New Delhi: The record-breaking increase in tourists in Varanasi in recent years is attributable to the opening of the revamped Kashi Viswanath corridor as well as the Centre's fresh impetus to religious tourism. In his Sunday's 'Mann Ki Baat', PM Modi said the tourist footfall in Varanasi has crossed 10 crore a year.

Independent surveys have pegged the footfall in Varanasi at an eight-fold increase as compared to Goa in 2022. A survey by ICICI Direct suggested that while Varanasi received 7.2 crore tourists in 2022, Goa was far behind with 85 lakh.

The impact of the tourism boost, the PM pointed out, is being felt on lives and livelihoods. The survey said Varanasi's tourism-related income ballooned by 20-65%, while employment in the sector shot up by 34.2%.

This ties into the Union tourism ministry's own data, which pegs over 60% of tourism in India in the religious and spiritual tourism category. Ministry data also suggests that economics surrounding places of worship in India raked in close to Rs 1.3 lakh crore in 2022, up from Rs 65,070 crore in 2021.

Modi said that while Varanasi leads in footfall, other temple towns such as Ayodhya, Mathura and Ujjain are not far behind.

Modi also referenced two American pilgrims, who undertook the Amarnath Yatra inspired by the experiences of Swami Vivekananda. "They got so inspired that they themselves came for the Yatra. They consider it as the blessings of Lord Bholenath. This is the specialty of India that she accepts everyone, gives something or the other to everyone," he said.

The PM also lauded the efforts of French yoga practitioner Charlotte Chopin, who despite being over 100 years, is a prominent face of India's science of yoga and its strength.

The PM also urged people to embrace one's heritage, and to present it responsibly to the world, while drawing the country's attention to one such effort being made in Ujjain.

SPECIAL INSCRIPTIONS IN PANCHAYATS

In I-Day run-up, Modi launches campaign to honour martyrs

Thanks US for returning Indian-origin artefacts, Saudi for allowing women for Haj without male companions

EXPRESS NEWS SERVICE

PRIME MINISTER Narendra Modi on Sunday announced the launch of the "Meri Mati Mera Desh" campaign to honour the country's martyrs.

आस्था की यात्रा — अमेरिकी तीर्थयात्रियों ने कहा- विवेकानंद से प्रेरित थे, 40 साल से यहां आना सपना था

कैलिफॉर्निया से अमरनाथ आए थे दो अमेरिकी, मोदी बोले- यह भारत है जो सबको अपनाता है

पीटीआई, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम में अमेरिका के कैलिफोर्निया के रहने वाले दो नागरिकों का जिक्र किया जो अमरनाथ की यात्रा करने के लिए भारत आए थे। प्रधानमंत्री ने कहा, 'मुझे दो अमेरिकन दोस्तों के बारे में पता चला है जो कैलिफोर्निया से यहां अमरनाथ यात्रा करने आए थे। इन विदेशी मेहमानों ने अमरनाथ यात्रा से जुड़े स्वामी विवेकानंद के अनुभवों के बारे में कहीं सुना था। इससे उन्हें इतनी प्रेरणा मिली कि ये खुद भी अमरनाथ यात्रा करने आ गए। ये, इसे भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद मानते हैं। यही भारत की खासियत है कि सबको अपनाता है, सबको कुछ न कुछ देता है।'

इन दोस्तों ने बताया था कि अमरनाथ की यात्रा पर आना इनका 40 साल पुराना सपना था जो इस साल पूरा हुआ है। इनमें से एक ने कहा, 'स्वामी विवेकानंद जब अमरनाथ आए तो उन्हें बहुत ही महत्वपूर्ण अनुभव हुआ। यह असंभव लग रहा था और यहां आना एक सपना था, लेकिन भोलेनाथ की कृपा से सब कुछ हुआ।'

Agency

- विवेकानंद से प्रेरित होकर दो अमेरिकी इस साल अमरनाथ यात्रा पर आए थे
- पीएम मोदी ने कहा, भारत सबको कुछ न कुछ देता है

बिना महरम हज यात्रा बड़ा बदलाव: पीएम

मोदी ने मुस्लिम महिलाओं के बिना महरम हज यात्रा करने को एक बड़ा बदलाव बताया। महरम वह पुरुष होता है, जो महिला का पति या खून के रिश्ते में हो। मोदी ने कहा कि उन्हें हज यात्रा से लौटी महिलाओं के कई पत्र भी मिले हैं, जो मन को संतोष देते हैं। ऐसी महिलाओं की संख्या सौ-पचास नहीं, बल्कि 4,000 से ज्यादा है। प्रधानमंत्री ने सऊदी अरब सरकार का आभार जताया।

देशवासी पेड़ लगाने और पानी बचाने के लिए आगे आएं: पीएम

4000 महिलाओं ने ... 100 ...

शहडोल की फुटबॉल क्रांति का भी किया जिक्र

मोदी के 'मन की बात' में भास्कर की खबर

आदिवासियों ने 100 कुएं 'रिचार्ज' किए, पीएम बोले- यह उत्साहवर्धक

100 और कुओं की तैयारी

बदलाव... 4 हजार महिलाओं ने बगैर पुरुष के हज किया

Return of artefacts will curb heritage theft: PM

... thank the US for returning the precious heritage... Such efforts will increase awareness... to stop the theft of a cultural heritage

'Bhojpatra calligraphy' biz by Mana women a boost for economy: PM

18 पुराणों का उज्जैन में 18 शैलियों में हो रहा है चित्रांकन

'India created a unique record of destroying 10L kg of drugs'

દેશમાં ૧૫મી ઓગસ્ટથી 'મેરી માટી મેરા દેશ' અભિયાન : મોદી

૪૦૦૦ મુસ્લિમ મહિલાઓએ સાથી પુરુષ વિના હજયાત્રા કરી

મોદીએ શું કહ્યું?

यंदाही 'हर घर तिरंगा' अभियान!

हुतात्म्यांच्या सन्मानार्थ 'मेरी माती, मेरा देश' मोहीम

Hajj pilgrimage very special for Muslim women this year: PM Modi in 'Mann Ki Baat'

PM THANKS SAUDI GOVT FOR OPENING A NEW CHAPTER IN HAJJ PILGRIMAGE

Many innovative efforts 'visible' to save J&K youth from drugs: PM Modi

'Huge transformation': Modi on 4,000 women performing Haj without 'mehram'

آنے والی نسلوں کو نشیات سے بچانا ہوگا

وزیراعظم کا ماہانہ پروگرام من کی بات میں قوم سے خطاب

Drug addiction big problem for whole society: PM Modi

मन की बात का 103वां एपिसोड

शहडोल में आदिवासियों ने कुओं को वाटर री-चार्ज सिस्टम से जोड़ा, यहां मिनी ब्राजील भी-मोदी

ಮೆಹರಮ್ ಇಲ್ಲದೇ ಹಜ್ ಯಾತ್ರೆ ಮಹತ್ವದ ಬದಲಾವಣೆ

ಪ್ರಯೋಜನ ಪಡೆದ 4 ಸಾವಿರ ಮಹಿಳೆಯರು ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ ಮೆಚ್ಚುಗೆ

എന്റെ മണ്ണ്, എന്റെ രാജ്യം

7500 കലശങ്ങളിൽ മണ്ണും വൃക്ഷത്തൈയുമായി അമൃത് കലശ് യാത്ര

■ ഡൽഹിയിൽ ഉദ്യാനം നിർമ്മിക്കുമെന്ന് പ്രധാനമന്ത്രി മോദി

■ രക്തസാക്ഷികൾക്ക് ആദരമായി ഗ്രാമങ്ങളിൽ ശിലാഫലകം

മണിപ്പൂർ: മൗനം തുടരുന്നു

कार्यक्रम | प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बोले, आज देवभूमि की महिलाएं भोजपत्र से बेहद सुंदर स्मृति चिह्न और कलाकृतियां बना रही हैं, प्राचीन काल से भोज पत्र का है खास महत्व

पीएम ने की नीती-माणा घाटी की महिलाओं के कौशल की प्रशंसा

स्थानीय उत्पादों को मिला बढ़ावा : धामी

गौरवशाली क्षण

नरेश बंसल और सविता कपूर ने सुनी मन की बात

पीएम से प्रेरित जोशी दून में कराएंगे फुटबाल मैच

ಸದ್ಯದಲ್ಲೇ ನನ್ನ ಭೂಮಿ ನನ್ನ ದೇಶ ಅಭಿಯಾನ

ನವದೆಹಲಿ: ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯೋತ್ಸವದ ಅಮೃತ ಮಹೋತ್ಸವ ಸಮೀಪಿಸುತ್ತಿರುವ ಬೆನ್ನಲ್ಲೇ, ಹುತಾತ್ಮ ವೀರ ಯೋಧರಿಗೆ ಗೌರವ ಸಲ್ಲಿಸುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ 'ನನ್ನ ಭೂಮಿ ನನ್ನ ದೇಶ' ಅಭಿಯಾನ ಆರಂಭ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ ಎಂದು ಪ್ರಧಾನಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಆಕಾಶವಾಣಿ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಭಾನುವಾರ ಮಾತನಾಡಿದ ಅವರು, ದೇಶಾದ್ಯಂತ ನಮ್ಮ ಹುತಾತ್ಮ ಯೋಧರ ಸ್ಮರಣೆಗಾಗಿ ಅನೇಕ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ ಆಯೋಜಿಸಲಾಗುವುದು. ಗ್ರಾಮ ಪಂಚಾಯಿತಿಗಳಲ್ಲಿ, ವಿಶೇಷ ಫಲಕಗಳನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸಲಾಗುವುದು. ದೇಶಾದ್ಯಂತ ಅಮೃತ ಕಳಶ ಯಾತ್ರೆ ಜರುಗಲಿದ್ದು, ದೇಶದ ಮೂಲೆ ಮೂಲೆಗಳಿಂದ 7500 ಕಳಶಗಳಲ್ಲಿ ಮಣ್ಣು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ, ನಂತರ ಈ ಯಾತ್ರೆ ರಾಜಧಾನಿ ದೆಹಲಿ ತಲುಪಲಿದೆ. ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಯುದ್ಧ ಸ್ಮಾರಕದ ಸಮೀಪ ಅಮೃತ ಉದ್ಯಾನವನ ನಿರ್ಮಿಸಲಾಗುವುದು ಎಂದರು.

ವಿವರ ಪುಟ 8

PM urges people to embrace one's heritage

Continued from page 1

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

60 हजार से ज्यादा अमृत सरोवर बने

मोदी ने लोगों से पेड़ लगाने व जल संरक्षण की अपील की। जल संरक्षण के लिए केंद्र के प्रयासों को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान बनाए गए 60,000 से अधिक अमृत सरोवर मील के पत्थर के रूप में उभरे हैं और 50,000 से ज्यादा पर काम चल रहा है।

મોદીના ખાસ કાર્યક્રમ મન કી બાતમાં રાજકોટ ચમક્યું

વડાપ્રધાન મોદીએ રાજકોટના ચિત્રકારના ભરપેટ વખાણ કર્યા

ગત વર્ષે સ્વતંત્રતા દિવસના અવસર પર હર ઘર તિરંગા અભિયાન માટે દેશ એકસાથે આવ્યો હતો, તેવી જ રીતે દરેક ઘર પર ત્રિરંગો ફરકાવવાનો છે : વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોદી

उज्जैन में 18 पुराण गाथा पर बनी पेंटिंग लगेंगी

उज्जैन। मन की बात में मोदी ने उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय में लगने वाली 18 पुराण गाथा पर बनने वाले पेंटिंग का जिक्र किया है। महाकाल लोक के त्रिवेणी संग्रहालय में आगामी दिनों में इन पेंटिंग को लगाया जाएगा। जो देश के विभिन्न शहर में अलग अलग शैली में बन रही है। देश भर में रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम के जरिए देशवासियों से संवाद किया। मन की बात कार्यक्रम का ये 103 वां एपिसोड था। प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम में कई महत्वपूर्ण बातों को साझा किया। इसमें उन्होंने उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय में लगने वाली 18 पुराण गाथा पर बनने वाले पेंटिंग का भी जिक्र किया। पीएम ने कहा कि इन दिनों उज्जैन में पेंटिंग बनाने का काम चल रहा है जहां देश भर के 18 कलाकार पुराणों पर आधारित आकर्षक चित्र कथाएं बना रहे हैं।

मन की बात : प्रधानमंत्री मोदी बोले - आपदा में पूरा देश रहा एकजुट

सर्वजन हिताय भारत की भावना और उसकी ताकत

भारतीय परंपरा और पर्व हमें बनाते हैं गतिशील

मेरी माटी, मेरा देश अभियान में जुड़ें देशवासी : मोदी

अमर बलिदानियों की स्मृति में होंगे अनेक कार्यक्रम

అమరవీరుల కోసం 'మేరీ మాటీ మేరా దేశ్'

ప్రధాని మోదీ ప్రకటన

بہت بڑی تبدیلی کی شروعات

4000 سے زیادہ خواتین بغیر محرم حج پر گئیں: وزیر اعظم

मन की बात

सावन का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व : मोदी

'মন কী বাত'ৰ জৰিয়তে ঘোষণা প্ৰধানমন্ত্ৰী মোডীৰ স্বাধীনতা দিৱসত 'মোৰ মাটি মোৰ দেশ' অভিযান

বীৰ স্বাধীনৰ শ্ৰদ্ধা

शहीदों का सम्मान : 'मेरी माटी, मेरा देश' अभियान

देशभर के गांवों की मिट्टी और पौधों से बनेगी 'अमृत वाटिका'

60 हजार से ज्यादा अमृत सरोवर बने

THE HINDU

Mann Ki Baat | India created record by destroying 10 lakh kg of drugs: PM Modi

NDTV

2 US Men Found Mention In PM's Mann Ki Baat For Their Amarnath Yatra

The Indian EXPRESS

On Mann Ki Baat, PM Modi announces 'Meri Mati Mera Desh' campaign to honour martyrs

THE ECONOMIC TIMES

Mann Ki Baat: 4,000 Indian women performed Haj without 'mehram', it's 'huge transformation', says PM

Hindustan Times

MANN KI BAAT: Prime Minister Modi praises Uttar Pradesh's plantation drive, pilgrimage boom

अमर उजाला

Mann Ki Baat: 'चार हजार मुस्लिम महिलाओं ने बिना पुरुष सहयोगी के हज यात्रा की', पीएम मोदी बोले- यह बड़ा बदलाव

NBT नवभारत टाइम्स

Mann Ki Baat: जानिए उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय के बारे में सब कुछ, पीएम मोदी ने मन की बात में किया था जिक्र

ZEE BUSINESS

Mann Ki Baat में बोले PM मोदी, शहीद वीर-वीरांगनाओं को सम्मान देने के लिए शुरू होगा 'मेरी माटी मेरा देश अभियान

दैनिक जागरण

Mann Ki Baat: मन की बात में छाया काशी विश्वनाथ धाम, PM मोदी बोले- प्रति वर्ष 10 करोड़ श्रद्धालु कर रहे दर्शन

tv9 भारतवर्ष

कौन हैं 100 साल की योगा टीचर शारलोट शोपा, जिनका PM मोदी ने मन की बात में किया जिक्र

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात में 100 साल की योगा टीचर शारलोट शोपा का जिक्र किया. फ्रांस में प्रधानमंत्री मोदी ने उनसे मुलाकात की थी.

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार